डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 30 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

73वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

जयपुर >> शुक्रवार, 28 जनवरी, 2022

hillviewsamachar@gmail.com

जयपुर परकोटा (चारदिवारी) जल्द खो देगा विश्व विरासत का दर्ज़ा

शालिनी श्रीवास्तव

जयपुर। देश ने फरवरी 2020 में जयपुर परकोटे के लिए विश्व विरासत का दर्जा पाकर जश्न मनाया और अब मार्च 2022 में छिन जाएगा खिताब। खुशियाँ बदल जायेंगी मातम में । विश्व धरोहर दिवस (विश्व विरासत दिवस) हर साल 18 अप्रैल को मनाया जाता है। स्मृति के पन्नों में इस संदर्भ में जागरूकता बनाये रखने के लिए यह दिवस गठित किया गया था ताकि इस प्रकार पूरे विश्व में मानव सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक,सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाई जा सके। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को की पहल पर एक अंतर्राष्ट्रीय संधि की गई जो विश्व के सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण के हेतु प्रतिबद्ध है। यह संधि सन् 1972 में लागू की गई। प्रारंभ में मुख्यतः तीन श्रेणियों में धरोहर स्थलों को शामिल किया गया।प्राकृतिक धरोहर स्थल, दूसरा सांस्कृतिक धरोहर स्थल और तीसरे मिश्रित धरोहर स्थल। जयपुर का चारदीवारी (परकोटा) जिसे फरवरी 2020 में यूनेस्को की सूची में स्थान मिला। जयपुर शहर के परकोटे (चारदीवारी) को विश्व विरासत शहर का दर्जा दिया गया। जयपुर का यह परकोटा विश्व धरोहर में शामिल भारत की 38वीं विरासत है। अहमदाबाद के बाद ऐसा दर्जा पाने वाला देश का दूसरे नंबर का शहर जयपुर है। इस अमूल्य और वैश्विक पहचान को नज़रअंदाज़ करता शासन-प्रशासन जयपुर से इस हक़ को जल्द छीन लेगा।

इस सम्बन्ध में क्षेत्र संबंधित उपायुक्त से आप बात करें। टाउन प्लानर की टीम इस पर रिपोर्ट तैयार करेगी। आप चाहें तो उनसे मिल लें। अगर ऐसा कुछ होता है तो हम आगे कार्यवाही करेंगे।

अवधेश मीणा (IAS)
उपायुक्त नगर निगम
जयपुर हेरिटेज

आयुक्त महोदय के संज्ञान में सब है लेकिन उनके हाथ बंधे होने की घुटन उनके प्रतिउत्तर में साफ झलक गयी।

मैं किसी को भी जवाब देने के लिए बाध्य व ज़िम्मेदार नहीं। आप कमिश्नर साहब से मिलें।

हंसा मीणा, उपायुक्त किशनपोल ज़ोन
नगर निगम हेरिटेज जयपुर

हंसा मीणा उपायुक्त पद की गरिमामयी व ज़िम्मेदार गद्दी पर बैठकर आम जनता और मीडिया से जिस लहज़े में बात करती हैं उससे प्रतीत होता है कि वो वह अधजल गगरी हैं जो छलकती ज़्यादा हैं। गत वर्ष प्रशासन शहरों के संग अभियान में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर कार्रवाई कर हैरिटेज नगर निगम में बड़े बदलाव किए गए थे जिसमें यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल के आदेश पर हेरिटज निगम आयुक्त अवधेश मीणा ने आदेश जारी कर उपायुक्त सोहनराम चौधरी को किशनपोल जोन से हटाकर राजस्व अधिकारी हंसा मीणा को किशनपोल जोन उपायुक्त लगाया था। क्या हंसा मीणा को इसी क़ाबिलियत का इनाम मिला था कि वे सोहनराम चौधरी से ज़्यादा लापरवाह ही नहीं बल्कि बदतमीज भी हैं।

इस संबंध में सतर्कता उपायुक्त को नोटिस दिया जा चुका है आप उन्हीं से मिलें कि क्या कार्यवाही हो रही है। वैसे इस कार्य की परमिशन ली हुई है निर्माता ने....

शशिकांत
अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक
नगर निगम जयपुर हेरिटेज

मुख्य नगर नियोजक महोदय स्वयं जानते हैं कि जयपुर कॉलेज (नाना की हवेली चौड़ा रास्ता) के मरम्मत की अनुमति हेरिटज द्वारा जारी की गई है न कि पुनर्निर्माण की।

बिल्डिंग बायलॉज का मेटर सतर्कता शाखा द्वारा नहीं देखा जाता। इस सम्बंध में सम्बंधित ज़ोन उपायुक्त से ही जानकारी ली जा सकती है और सबकी ज़िम्मेदारियाँ निश्चित हैं अतः परकोटे (चारदीवारी क्षेत्र) के सम्बंधित ज़ोन उपायुक्त से ही आप मिलें।

इस्लाम खान, उपायुक्त सतर्कता
नगर निगम जयपुर हेरिटेज

निगम के अधिकारियों से रुबरू होने के बाद साफ जाहिर होता है कि निगम लापरवाही नहीं बल्कि इस मुद्दे से हाथ धोना चाहता है।

धारा के विपरीत बहने की हिम्मत कौन करे?

फरवरी 2020 में यूनेस्को सूची में दर्ज होने के 2 वर्षों पश्चात भी जयपुर परकोटा चारदीवारी का ना डेवलपमेंट प्लान डेवलप हुआ और ना ही स्पेशल एरिया का टेस्ट प्लान बना। यूनेस्को की प्रतिनिधि जुनी हान इस क्षेत्र के बढ़ते अतिक्रमण,अवैध निर्माण की खाई में गिरती विरासत को स्वयं अपनी आँखों से देखकर गयीं हैं और हेरिटेज की इस दुर्दशा पर उन्होंने गहरी चिंता जताई थी।

मौजूदा मास्टर प्लान वर्ष 2011 में लागू किया गया था। इसमें चारदीवारी के 65 किलोमीटर परिधि क्षेत्र को स्पेशल एरिया दर्शाया गया है। मास्टर प्लान लागू होने के 2 साल में ही इस स्पेशल एरिया का डेवलपमेंट प्लान बनाकर लागू करना था लेकिन निगम की लापरवाही और उदासीनता के चलते यह काम समय पर सम्पन्न नहीं हो पाया है और आज तक लंबित है।

स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल की इस विषय में उदासीनता या लापरवाही नहीं बल्कि निरकुंशता है कि वे सबकुछ जानकर भी अनजान क्यों हैं? यह एक गंभीर विषय है जिस पर चीख़-चीख़ कर चर्चा हो रही है लेकिन शासन और प्रशासन दोनों ने कान में रुई डाल ली है क्योंकि वजह जग-ज़ाहिर है लेकिन विरोध करने की ताक़त कहें या धारा के विपरित बहने की हिम्मत किसी में नहीं!

ख़बर-बेख़बर

शहर की शांति और सौंदर्य लगातार लील रहे हैं अतिक्रमण और अवैध निर्माण

नगर निगम ग्रेटर व हेरिटेज के सभी इलाकों में अतिक्रमण और अवैध निर्माण लगातार और तेज़ी से बढ़ गए हैं और बढ़ते जा रहे हैं। हर एक अवैध निर्माण और अतिक्रमण की ख़बर दोनों निग़मों व उनके ज़ोन को है। स्थानीय लोगों की ओर से लगातार शिक़ायत, मीडिया में लगातार ख़बरें देने के बावजूद निगम की नींद नहीं खुली है क्योंकि चैन की नींद के लिए भूमाफियाओं की तरफ से जेबें गर्म की जा चुकीं हैं। भांग पूरे कुएं के साथ-साथ पूरी हवा में ही घुल गयी है।

निगम प्रशासन व स्वायत्त शासन का लगातार शिकायतों सूचनाओं को नजरअंदाज़ किया जाना इस बात को साबित करता है कि यहाँ भी सांठगांठ हो चुकी है। प्रशासन और स्वायत्त शासन दोनों के पेट भर दिए गए हैं। सैटबैक ना छोड़ना, रिहायशी-आवासीय कॉलोनी में व्यवसायिक भवनों का लगातार बनना और आये दिन इस तरह के अवैध निर्माणों का बढ़ना केवल घूसखोरी और बंधा हुआ कमीशन ही नहीं दर्शाता बल्कि इन अवैध निर्माणों में शासन-प्रशासन की हिस्सेदारी, साझेदारी या पार्टनरी को भी साबित करता है। दोनों निग़मों की मेयर अपने-अपने खोल में छिपी हैं नगर निगम हेरिटज की मेयर मुनेश गुर्जर सत्ता के नशे में चूर होकर बेहोश हैं और इधर ग्रेटर की मेयर शील धाभाई विपक्ष में होने का झुनझुना बजाकर केवल वक़्त काट रहीं हैं। जयपुर शहर व्यवसायिक जंगल में तब्दील होता जा रहा है।

ऊपर से लेकर नीचे तक सब जगह भ्रष्टाचार की जड़ें फैल चुकी हैं।

ज़िम्मेदार कौन?

स्याही सूख भी ना पाती है, अख़बार की ख़बर आ जाती है नई, एक बलात्कार की...

संविधान में महिलाओं को कई अधिकार दिये गये हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन पेज नं. 3 पर वर्णित है।

प्रदेश में बढ़ते लगातार बलात्कार के मामले बेटियों में ख़ौफ भर रहे हैं। 64 साल की बुज़ुर्ग महिला हो या 6 माह की बच्ची, महिला कहीं भी खुद को सुरक्षित नहीं पाती। राज्य में बढ़ते हुए इस कैंसर का क्या इलाज है? इस संबंध में सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं बहुत काम रही हैं किन्तु परिणाम ज़ीरो ही आ रहे हैं। क्या इस जघन्य अपराध की सज़ा बहुत शिथिल है या संस्कारों का अभाव समाज में जड़ पकड़ रहा है। यह नहीं कहा जा सकता कि शासन-प्रशासन इसके लिए मुस्तैद नहीं है, लेकिन फिर भी बढ़ते अपराध किसी बड़ी कमी की ओर इशारा करते हैं। आइए जानते हैं कि राजस्थान की बेटियाँ हमसे क्या अपेक्षा रखती हैं। जवाहर सर्किल जयपुर में 26 जनवरी को कई संस्थाओं ने इस महामारी के लिए घोर विरोध प्रदर्शन किया। बेटियों से हिलव्यू समाचार सम्पादक शालिनी श्रीवास्तव के साथ बातचीत के कुछ अंश-

जितेन्द्र सिंह
फाउण्डर ख़्वाहिश संस्था

कृष्णा, सेल्फ डिफेन्स एक्सपर्ट सदस्य, ख़्वाहिश संस्था

ख़ुशी कँवर
कक्षा-12
माता-पिता हो या कोई भी परिवार का संरक्षक बेटे और बेटी में जब तक भेद रहेगा यह अपराध होते रहेंगे। अतः बेटा बेटी एक समान होने चाहिए।

लवीना चेटवानी,
कॉलेज छात्रा
किसी भी स्त्री की इच्छा के विरुद्ध किया जाने वाला हर व्यवहार महिला उत्पीड़न में आता है। अतः सोच बदलने की आवश्यकता है।

जाह्नवी शर्मा
कक्षा-10
स्कूलों में सेक्स एजूकेशन पर भी काम हो ताकि किसी भी तरह के शारीरिक शोषण को समझना आसान हो।

दीक्षा तुंलसानी,
कॉलेज छात्रा
किसी भी स्त्री की ना का मतलब ना ही होता है। उसके विरुद्ध व्यवहार करना स्त्री के सम्मान को चोट पहुंचाना है।

वंशिका,
कक्षा-10
सभी शैक्षणिक संस्थाओं में सैक्स एज्यूकेशन के साथ-साथ सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग भी दी जानी चाहिए।

प्रिया बालोथिया,
कक्षा-12
परिवार में बेटी के संस्कारों के साथ-साथ बेटों के संस्कार के लिए ज़ोर दिया जाए ताकि वह स्त्री का सम्मान करना सीखें।

निकिता, कक्षा-11
किसी भी महिला को पुरुष के बराबर अधिकार मिलना बेहद आवश्यक है। सरकार को इसके लिए कड़े नियम बनाने चाहिए।

संस्कृति कक्षा-11
समाज की सोच अभी भी दकियानुसी है। जब तक यह सोच नहीं बदलेगी बेटियाँ सुरक्षित नहीं हो सकती।

न्यांशिका जैन,
कक्षा-10
बेटियाँ हर क्षेत्र में अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सके इस तरह का वातावरण निर्माण होना ज़रूरी है।

हिमांशी,
कक्षा-10
पारिवारिक संस्कार में ही बेटियों में आत्म विश्वास जगाना ज़रूरी हैकि वह इस समाज से अलग नहीं।

शासन-प्रशासन की लापरवाही या मिलीभगत?

जवाहर नगर, आदर्श नगर में लगातार अतिक्रमण व अवैध निर्माण की विस्तार सहित झलकियाँ

प्लॉट नं. 6, सेक्टर 3 जवाहर नगर (नगर निगम सामुदायिक केन्द्र के सामने)

जयपुर शहर के किसी भी कोने में चले जाइए, अतिक्रमण और अवैध निर्माण मुंह बाये खड़े हैं। सत्ता की निरंकुशता और प्रशासन के भ्रष्टाचारी रवैये साफ नज़र आते हैं। स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल के संज्ञान में यह मुद्दे आने के बाद भी क्यों सर उठा रहे हैं और पूरी दबंगता से भू-माफिया और दलाल लगातार अवैध निर्माण कर रहे हैं। सरकारी भूमि हो या निजी भवन सभी जगह आवासीय भवन व्यावसायिक भवनों में तब्दील होते जा रहे हैं। एक तरफ नगर निगम की रेवेन्यू जीरो होने का रोना रोया जाता है और दूसरी ओर आय के इन स्त्रोतों को फुफ्त में सार्वजनिक रूप से अवैध निर्माण के लिए मौन मूक सहमति दी जाती है। शासन-प्रशासन की लापरवाही कहें या मिलीभगत? दबे शब्दों में आसपास के नागरिक और कार्यालय के कर्मचारी सच को बयान करते हैं लेकिन इस निरंकुश शासन से सामना करने की हिम्मत आम आदमी नहीं कर सकता। इस संबंध में **हिलव्यू समाचार** की टीम ने आदर्श नगर जोन के उपायुक्त आर.के. मीणा (आर.ए.एस.) से बातचीत की...

आर.के. मीणा, उपायुक्त
आदर्श नगर जोन, जयपुर

उपायुक्त महोदय से बातचीत के दौरान शासन से पूरा सहयोग न मिलने का दर्द महसूस हुआ। सरकारी अधिकारी की शासन के समक्ष उदासीनता झलक रही थी। शासन की लापरवाही, निरंकुशता व भ्रष्टाचारी रवैये प्रशासन के हाथों की बेड़ी बनते प्रतीत होते हैं।

प्रश्नः आपके क्षेत्र में लगातार अवैध निर्माण व अतिक्रमण बढ़ रहे हैं जिसमें महेश्वरी स्कूल के पास, जैन हॉस्पिटल के पास, सामुदायिक नगर निगम के सामने के अवैध निर्माण मुख्य हैं। आपके विभाग ने इस संबंध में क्या कार्यवाही की है?

उत्तरः किसी भी तरह के अवैध निर्माण व अतिक्रमण के लिए भवन निर्माता को नोटिस जारी किये गये हैं और उन पर कार्रवाई हो रही है।

प्रश्नः आपके नोटिस के बाद व कार्रवाई के साथ साथ यही अवैध भवन निर्माण लगातार जारी हैं उन्हें रोका नहीं गया है इस संबंध में क्या कहेंगे आप?

उत्तरः अगर नोटिस देने के बाद भी यह निर्माण जारी है तो दूसरा नोटिस दिया जायेगा और कार्रवाई की जायेगी।

प्लॉट नं. 202 फतेह टिब्बा, खरबूजा मंडी आदर्श नगर

प्लॉट नं. 757, सिंधी कॉलोनी, शान्ति पथ, जैन हॉस्पिटल के सामने, जवाहर नगर

सेक्टर नं.4, प्लाट नं. 20, जवाहर नगर

प्लॉट नं. B-143 सेठी कॉलोनी, आदर्श नगर

लगातार स्वायत्त शासन विभाग से लेकर नगर निगम के संबंधित जोन तक संपर्क करने के उपरांत भी स्थानीय लोगों को, मीडियो को और अवैध निर्माण से संबंधित प्राप्त सूचनाओं को नज़रअंदाज़ करना शासन प्रशासन की लापरवाही नहीं बल्कि उसकी मिलीभगत को प्रमाणित करता है। सरकारी जमीनों पर होते हुए कब्जों की सूचना मिलने पर भी निगम अधिकारी और कर्मचारियों का स्थल पर ना आना भी इस प्रमाण को पुख्ता करता है। जिस भी भू-माफिया से प्रसाद नहीं मिलता है प्रशासन उसकी भूमि को सीज करने में, नोटिस देने में शीघ्रता जरूर दिखाता है।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर ≫ शुक्रवार, 28 जनवरी, 2022

संपादकीय

इस गणतंत्र दिवस पर हमें अपने संविधान के संदेशों को गहराई से समझने की है आवश्यकता

भारत की स्वतंत्रता के बाद संविधान निर्माताओं ने सैकड़ों वर्षों की बौद्धिक परतंत्रता और दासता को मिटा कर भारतीय राजनीति को एक सर्वप्रिय और वैश्विक स्वरूप प्रदान करने की जो कोशिश की, उसे गणतंत्र दिवस पर गहराई से समझना आवश्यक है। कुछ कम्युनिस्ट विचारकों ने धर्म को मजहब के समानार्थी मानने की भूल करते हुए सनातन धर्म के शाश्वत मानव मूल्यों को संकीर्ण दृष्टि से समझने का जो कार्य किया, उसे मिटाते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने भारतीय जीवन-पद्धति को धर्म का मूल मानते हुए राष्ट्र के कल्याण के लिए उनका सूत्र वाक्य में प्रयोग किया और धर्म शब्द की वास्तविक व्याख्या की। यूरोपीय विचारक और वामपंथी इतिहासकार भारत के जीवन दर्शन की जिस गहराई की थाह नाप भी न सके, उसे स्वतंत्रता बाद संविधान निर्माताओं और चिंतकों ने पुनः व्याख्यायित करने का काम किया तथा उसके स्वरूप को स्पष्ट किया। इसी कारण 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय' को भारतीय संसद के प्रेरणा वाक्य के रूप में स्वीकार किया गया तो भारत की न्यायपालिका का प्रेरणा वाक्य बना- 'धर्मो रक्षति रक्षितः।'

भारतीय संविधान की मूल प्रति में जिन सांकेतिक चित्रों का प्रयोग हुआ है, वे भी भारतीय संस्कृति से ही लिए गए हैं, परंतु दुर्भाग्यवश हमारे इस संविधान का मूल स्वरूप आम लोगों को सहज उपलब्ध नहीं है। संविधान का जो पाठ बाजारों में उपलब्ध है, प्रायः उसमें वे सांकेतिक चित्र नहीं दिए होते। संविधान के जिस भाग में भारतीय नागरिकता का उल्लेख है, उस भाग का प्रारंभ वैदिक काल के गुरुकुल से किया गया है। ऐसा गुरुकुल जहां वैदिक उपनिषदों का पाठ हो रहा है और हवन भी हो रहा है। वैदिक ऋषि द्वारा किया जाने वाला यह हवन ही भारतीय संस्कृति के मूल तत्व को बताने के लिए पर्याप्त है। इसी प्रकार संविधान के भाग तीन में, जहां मौलिक अधिकारों की चर्चा की गई है उसका प्रारंभ राम, सीता और लक्ष्मण के चित्रों से किया गया है। भारतीय संविधान के इस स्वरूप को सांस्कृतिक आधार देने के निमित्त भगवान शंकर, भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के भी चित्र हैं। संविधान में दिए गए इन चित्रों का तात्पर्य भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि को रेखांकित करना ही है। ये चित्र भारत के इतिहास की ओर भी संकेत करते हैं। दुर्भाग्य से भारत के विभिन्न दल सेक्युलरिज्म की आड़ में अल्पसंख्यकवाद, अलगाववाद जैसी छिछली राजनीति कर वोट बैंक तक अपनी पहुंच बनाने के फेर में भारतीय संविधान की मूल अवधारणा को ही दृष्टि ओझल करने की कोशिश करते रहे हैं।

भारतीय राजनीति से जुड़े अधिकांश लोगों में अपनी संस्कृति के तत्वों को लेकर विभ्रम और अनभिज्ञता की स्थिति रही। आज भी अधिकांश लोग भारत के पूरे सांस्कृतिक चरित्र को पश्चिमी चश्मे से देखना चाहते हैं। सबसे अधिक विभ्रम अंग्रेज इतिहासकारों और विचारकों ने फैलाया। उनकी हां में हां मिलाते हुए भारतीयता विरोधी कुछ भारतीय विचारकों एवं लेखकों ने भी उसे फैलाया। इन सबके पीछे एक ही लक्ष्य था-भारत को मानसिक स्तर पर विभाजित रखना। पहले आर्य और द्रविड़ में विभाजन किया। बाद में यह स्थापित करने लग गए कि भारत कभी एक संगठित राष्ट्र के रूप में नहीं रहा और न ही वह कभी सांस्कृतिक या राजनीतिक इकाई के रूप में पहचाना गया। इस दुष्प्रचार ने धीरे-धीरे भारत की सांस्कृतिक और राजनीतिक एकता पर विपरीत असर डाला। यदि बार-बार किसी झूठ को दोहराया जाए तो एक समय के बाद वह सत्य सा प्रतीत होने लगता है।

भारत की प्राचीन राजनीति का आधार आध्यात्मिक चिंतन है, परंतु उद्देश्य सर्वदा ही मानव मात्र का कल्याण रहा है। संविधान के 'मौलिक अधिकारों' वाले भाग के पहले प्रभु श्रीराम, सीता और लक्ष्मण का चित्र देकर यह संकेत भी दिया गया है कि 'रामराज्य' तभी आ पाएगा, जब नागरिकों को विधि के सामने समानता का अधिकार प्राप्त हो। चाहे वह शिक्षा या अभिव्यक्ति की समानता हो या शोषण, जातीयता, लिंगभेद आदि के विरुद्ध समानता का अधिकार हो। इसी प्रकार संविधान के 'राज्य के नीति निर्देशक तत्व' वाले भाग से पहले भगवान श्रीकृष्ण को अर्जुन को उपदेश देने का चित्र रखने के पीछे भी भारतीय राजनीति में नीतिगत व्याख्या का प्राचीनतम स्वरूप दिग्दर्शित करने का ही भाव निहित है। लोक कल्याण के लिए व्यक्ति के क्या कर्तव्य हैं? नीति को निर्धारित करने वाले कौन से तत्व हैं? इन सबका विशद विवेचन श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद् गीता में अर्जुन को ज्ञान देते हुए किया है। इस सबके पीछे एक ही उद्देश्य है कि राष्ट्र की वर्तमान भावना को भारत की हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति और उसके प्रतीकों के साथ भी जोड़ा जाए, तभी इस राष्ट्र की विशेषता को विश्व समुदाय पहचान पाएगा।

राष्ट्र केवल एक भौगोलिक या राजनीतिक इकाई ही नहीं होता। राष्ट्र सबसे पहले व्यक्ति की चेतना में पैदा होता है। उस राष्ट्र के प्रति व्यक्ति के भीतर रागात्मक लगाव उसे उत्तराधिकार में प्राप्त होता है। वैसे ही जैसे राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधन, इतिहास, परंपराएं, परिवेश और स्मृतियां हमें सहजता से उत्तराधिकार में प्राप्त होती हैं। हमारा संविधान हमारी उसी राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक माना जाना चाहिए। राष्ट्रीय चेतना से जुड़े इन प्रतीकों को रेखांकित करने, सम्मानित करने और साथ ही उनका गौरव गान करने की आवश्यकता है। यह एक शुभ संकेत है कि पिछले कुछ वर्षों से यह काम किया जा रहा है और इस क्रम में उन परंपराओं का परित्याग किया जा रहा है, जो ब्रिटिश राज के दौरान स्थापित की गईं और किन्हीं कारणों से स्वतंत्रता के बाद भी जारी रहीं।

रोबोट का फ्यूचर फेस

हाल ही में अमेका नाम का एक ह्यूमन रोबोट पेश किया गया. इसे रोबोट का फ्यूचर फेस भी कहा जा रहा है. इसे एक महिला का चेहरा दिया गया है. रोबोट की खास बात यह है कि यह किसी इंसान की तरह बात करता है. इसके चेहरे का एक्सप्रेशन भी इंसान की तरह है. सोशल मीडिया पर अमेका रोबोट के बातचीत का एक वीडियो वायरल हो रहा है. वीडियो में इससे जो पूछा गया, उसके सही जवाब दिए.

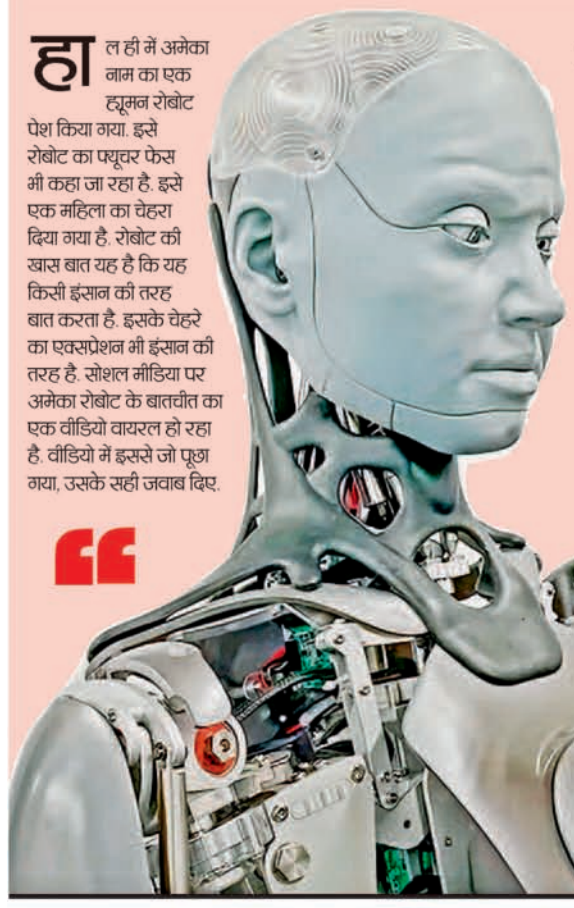

AI x AB पर काम करती है अमेका

अमेका रोबोट को इंसान की तरह दिखाने के लिए इसमें ह्यूमन लाइक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के साथ ह्यूमन लाइक आर्टिफिशियल बॉडी (AI x AB) का इस्तेमाल किया गया है. अमेका पर पावरफुल ट्रिटियम रोबोट ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग सिस्टम का परीक्षण और विकास किया जा सकता है.

अमेका में ह्यूमनॉइड रोबोटिक्स हार्डवेयर का इस्तेमाल किया गया है. इसे एडवांस्ड मेस्मर टेक्नोलॉजी पर तैयार किया गया है.

मॉड्यूलर डिजाइन

इसका हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों मॉड्यूलर हैं. इसे आसानी से अपग्रेड किया जा सकता है. इसके सभी मॉड्यूल स्वतंत्र रूप से चलते हैं. इसमें सिर और हाथ लगाए गए हैं. बाकी बॉडी रोबोटिक है.

सिर में क्लाउड

इसके सिर में ट्रिटियम रोबोट ऑपरेटिंग सिस्टम दिया गया है जो क्लाउड कनेक्टेड प्रोग्राम से कनेक्ट है. ये चीजों को सुनकर और समझकर आगे के इंस्ट्रक्शन देता है.

नेचुरल मोशन

बातचीत के दौरान इसके चेहरे के हाव-भाव एकदम इंसान के चेहरे जैसे लगते हैं. अमेका मनुष्यों और किसी भी मेटावर्स या डिजिटल क्षेत्र के बीच कन्वर्सेशन के लिए एक आदर्श मंच है.

दांतों की सफाई करेगा बैटरी वाला ब्रश

Y-ब्रश को फ्रांस की फास्टेश कंपनी ने 3 साल में तैयार किया. कई विट्रो और क्लिनिकल ट्रायल के बाद अप्रूव किया गया. ब्रश में 35 हजार नायलॉन ब्रसल्स हैं जो नाइलॉनमेड तकनीक पर बनाए गए हैं. इस ब्रश की खास बात यह है कि महज 10 सेकंड में यह डीप क्लीनिंग कर देता है. इसमें रिचार्जेबल बैटरी मिलती है. इसे बच्चे और बड़ों के लिए दो अलग साइज में तैयार किया गया है. दांतों की बेहतर सफाई के लिए इसमें 3 वाइब्रेशन मोड दिए गए हैं.

एचडी रिकॉर्डिंग वाला वेबकैम

क्वांटम ने अब एक ऑटो-फोकस फुल एचडी वीडियो कॉलिंग वेबकैम QHM-999RL पेश किया है. यह वेबकैम एक इन-बिल्ट माइक्रोफोन के साथ आता है. यह 30 FPS फ्रेम दर पर 1920x1080 फुल HD रिजॉल्यूशन प्रदान करता है.

वेबकैम रिकॉर्डिंग और गेमिंग उद्देश्यों के लिए भी परफेक्ट है. इस कैमरे में ऑटोमेटिक फेस डिटेक्शन भी है. क्वांटम ने इस कैमरे को वर्क फ्रॉम होम के बढ़ते ट्रेंड को ध्यान में रखते हुए लॉन्च किया है. इसके साथ बेहतर कॉलिंग के लिए नवाइज कैंसिलेशन भी दिया गया है. कैमरा कई अन्य उद्देश्यों की पूर्ति करता है जैसे कि ऑनलाइन डॉक्टर परामर्श, ऑनलाइन क्लास में भाग लेना, सोशल मीडिया कंटेंट प्रोडक्शन आदि. किसी को भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, भले ही आसपास के क्षेत्र में बहुत रोशनी या बहुत अंधेरा ही क्यों न हो. यह कैमरा ऑटो व्हाइट बैलेंस और ऑटोफोकस के साथ आता है.

थर्मामीटर का काम करेगी स्मार्टवॉच

पेबल ने अपनी स्मार्टवॉच पीब्बल Cosmos Pro को लांच कर दिया है. इसमें आप म्यूजिक को अपलोड कर सकते हैं और ईयरफोन से सुन सकते हैं. इसके साथ एक साल की रिप्लेसमेंट वारंटी भी मिल रही है. इसके अलावा इस वॉच के साथ वन टैप वॉयस असिस्टेंट भी मिलता है. पेबल की इस स्मार्टवॉच से आप हार्ट रेट के साथ ब्लड ऑक्सीजन लेवल और ब्लड प्रेशर भी चेक कर सकते हैं. इसमें 1.7 इंच की HD फ्लुइड डिस्प्ले है जो कि मेटल फ्रेम के साथ आती है. इसमें कॉलिंग के लिए इनबिल्ट माइक और स्पीकर मिलेगा. इसमें ब्लूटूथ 5.0 है. सिलिकॉन स्ट्रैप मिलता है. इस वॉच में थर्मामीटर भी दिया गया है. इसकी बिल्ड क्वॉलिटी रग्ड है. इसके अलावा इसमें सिलिकॉन का स्ट्रैप दिया गया है. इसमें 1.3 इंच की HD डिस्प्ले दी गई है. इसमें 24x7 हार्ट रेट मॉनिटर के अलावा ब्लड ऑक्सीजन के लिए SpO2 सेंसर भी है.

सरफेस प्रो एक्स लैपटॉप

माइक्रोसॉफ्ट ने सरफेस डिवाइस वाई-फाई सरफेस प्रो एक्स लैपटॉप लांच किया है. यह विंडोज 11 पर काम करता है और इसमें 64-बिट इमुलेशन इनबिल्ट है. इसमें 2,880×1,920 पिक्सल रेजोल्यूशन के साथ 13 इंच का पिक्सलसेंस डिस्प्ले है. यह एक ऑक्टा-कोर माइक्रोसॉफ्ट SQ1/ SQ2 प्रोसेसर से लैस है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑनबोर्ड न्यूरल इंजन के सा, इसका आई कॉन्टैक्ट फीचर यूजर्स को वीडियो कॉल पर अपने विजन एडजेस्ट करने में मदद करता है. इसमें दो यूएसबी टाइप-सी पोर्ट और एक डेडिकेटेड मैग्नेटिक सर्फ लिंक शामिल हैं. इसके अंतर्गत 128 जीबी और 256 जीबी स्टोरेज वाला मॉडल शामिल है.

स्लिम बेजल्स वाला टैब

सैमसंग गैलेक्सी टैब A8 को लांच कर दिया गया है. यह एंड्रॉइड 11 पर चलता है. इसमें 10.5 इंच का WUXGA (1,920x1,200 पिक्सल) टीएफटी डिस्प्ले 16:10 आस्पेक्ट रेशियो, 80% स्क्रीन-टू-बॉडी रेशियो और सभी तरफ स्लिम बेजल्स के साथ है. इसमें 2GHz ऑक्टा-कोर प्रोसेसर है जिसे 4GB तक रैम और 64GB ऑनबोर्ड स्टोरेज के साथ जोड़ा गया है. इसमें 8-मेगापिक्सल का प्राइमरी रियर कैमरा और साथ ही 5-मेगापिक्सल का सेल्फी कैमरा है. इसमें डॉल्बी एटमॉस सपोर्ट के साथ क्वाड स्पीकर सेटअप है. टैब में 7,040mAh की बैटरी है जो 15W फास्ट चार्जिंग को सपोर्ट करती है. इसमें सैमसंग नॉक्स डिफेंस-ग्रेड सिक्योरिटी प्लेटफॉर्म भी मिलता है. टैबलेट का डाइमेंशन 246.8x161.9x6.9mm और वजन 508 ग्राम है. कनेक्टिविटी ऑप्शन में 4G LTE, वाई-फाई 5, ब्लूटूथ V5, USB टाइप-C पोर्ट और 3.5mm हेडफोन जैक मिलता है. ऑनबोर्ड सेंसर में एक्सेलेरोमीटर, कंपास, जाइरोस्कोप, लाइट, हॉल सेंसर, जीपीएस, ग्लोनास, बीडौ और गैलीलियो शामिल हैं.

कू एप : 2 करोड़ से ज्यादा डाउनलोड्स

देसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म Koo App में हिंदी समेत 10 भाषाओं का समावेश है. अब कू ने 2 करोड़ डाउनलोड्स का आंकड़ा पार कर लिया है. इस एप पर तमाम क्षेत्रों से देश की दिग्गज हस्तियां नियमित रूप से अपनी जुबान में Koo करती हैं और लोगों से संवाद स्थापित करती हैं.

तेजी से जुड़ते नये यूजर्स के साथ इस वर्ष डाउनलोड का आंकड़ा 10 करोड़ पार होने की उम्मीद है. यहां उपयोगकर्ताओं के पास भाषा की बाधाओं के बिना डिजिटल स्तर पर खुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर है. यह पोस्ट को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति देता है. भविष्य में सभी 22 आधिकारिक भारतीय भाषाएं इसमें शामिल हो सकती हैं.

कई भाषाओं में लाइव अपडेट्स

कू एप ने मतदाता जागरूकता अभियान शुरू किया है. कू अब अनेक भाषाओं में कई हाइपरलोकल पहल पेश करेगा. मतदाताओं के लिए कू एक स्पेशल सेक्शन लांच करेगा. इनमें हिंदी, पंजाबी, मराठी आदि भाषाओं में लाइव अपडेट्स, उम्मीदवारों और पार्टियों के बारे में समाचार और निर्वाचन क्षेत्र के स्तर की घोषणाओं की जाएंगी. खुली चर्चा के लिए कू रीयल टाइम में देसी भाषाओं में चैट रूम की भी पेशकश करेगा. इस अभियान के अंतर्गत मतदाता पंजीकरण, EPIC कार्ड डाउनलोड आदि विषय भी होंगे.

ईयरबड WF-C500

सोनी ने नए ईयरबड WF-C500 TWS लांच किया है. यह 5.8 मिमी ड्राइवरों से लैस है. ईयरब* डिजिटल साउंड एन्हांसमेंट इंजन (DSEE) तकनीक के साथ आते हैं.

यह तकनीक ऑडियो और कॉल की क्वालिटी को बढ़ाती है. यह गूगल असिस्टेंट और सिरी सपोर्ट के साथ आता है. यह iOS और Android डिवाइस के साथ बेहतर कनेक्टिविटी के लिए एंड्रायड Fast Pair और Swift Pair को समर्थन करता है.

वॉयस पिकअप तकनीक

सोनी ने अपनी 1000X सीरीज के तहत WF-1000XM4 ट्रूली वायरलेस ईयरबड्स लांच किया है. इसमें प्रोसेसर V1 के है जो ध्वनि गुणवत्ता की बनाए रखने में मदद करता है. क्रिस्टल-क्लियर कॉल के लिए इसमें सटीक वॉयस पिकअप तकनीक है. इसका 360 रियालिटी ऑडियोलेट बेहतर संगीत देने में मददगार है. इसमें स्पीक-टू-चैट फीचर है बेहतर सुनने का अनुभव देता है. इसमें ब्लूटूथ, स्पलैश प्रूफ, आसान पेयरिंग और वॉयस असिस्टेंट जैसी सुविधाएं हैं.

कोविड से लड़ेगा हाईटेक मास्क

कोविड के दौरान फेस मास्क सबसे जरूरी हो गया है. इसी को ध्यान में रखते हुए एयरकॉम कंपनी ने हाईटेक मास्क लांच किया है. इस मास्क में सूक्ष्म कणों, वायरस, बैक्टीरिया को मारने के लिए एक्टिव फिल्टर लगाए गए हैं. ये सर्जिकल मास्क की तुलना में काफी मोटा है जिससे किसी भी तरह के वायरस, बैक्टीरिया अंदर नहीं जा सकते. यह कोविड से लड़ने के लिए एक अच्छा डिवाइस है.

बच्चे की हरकत बताएगा बेबी स्लीप ट्रेनर

जापानी कंपनी फर्स्ट एसेंट ने एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) पर काम करने वाला बेबी स्लीप ट्रेनर लांच किया है. यह बताएगा कि आपका बच्चा भूखा है, नींद में है, गुस्से में है, ऊब गया है या फिर असहज है. इस डिवाइस पर एक डिस्प्ले दिया है जिसमें बच्चे की अलग-अलग एक्टिविटी ट्रैक होती हैं. जैसे बच्चा कितनी देर सोया या फिर कितनी देर तक गुस्सा रहा. डिवाइस में म्यूजिक और लाइट भी है जो बच्चे को एंटरटेन करने का काम करती है.

कैमरे में लो-लाइट फोटोग्राफी मोड

हाल ही में लीका ने M11 Black कैमरा लांच किया. इसमें लेटेस्ट डिजाइन 60 मेगापिक्सल सेंसर है जो रिफ्रेस्ड इंटरफेस, इंप्रूव फोटो कैपेबिलिटी के साथ आता है. कैमरे में फुल-फ्रेम CMOS सेंसर बैकसाइड-इलुमिनेटेड है जो न्वॉइज को कम करने का काम करता है

बीएसआई कॉन्फिगरेशन के साथ उच्च-रिज़ॉल्यूशन सेंसर में ISO64 होने की वजह से यह ज्यादा सेंसेटिव है. इस वजह से कैमरा कम रोशनी में कमाल की फोटो के साथ आता है. यह कैमरा ट्रिपल रिज़ॉल्यूशन टेक्नोलॉजी के साथ आता है. इसमें 14-बिट कलर्स के साथ 60MP, 36MP या 18MP लेंस से स्टिल रिकॉर्डिंग की सुविधा मिलती है. रिज़ॉल्यूशन टेक्नोलॉजी आपको कम गुणवत्ता पर क्रॉपिंग या शूटिंग की कमियों के बिना आपको आवश्यक रिज़ॉल्यूशन चुनने देती है. 60MP सेटिंग में फाइन डिटेल शूटिंग के लिए उच्चतम रिज़ॉल्यूशन है और इसमें 14-स्टॉप डायनेमिक रेंज है; 36MP सेटिंग गतिशील रेंज और अच्छी तरह से नियंत्रित शोर के बेहतर 15 स्टॉप प्रदान करती है और 18MP सेटिंग कम रोशनी में बेहतरीन शोर प्रदर्शन और गतिशील रेंज के 15 स्टॉप के साथ शानदार प्रदर्शन करती है. कैमरे का नया Maestro III प्रोसेसर ट्रिपल रिज़ॉल्यूशन टेक्नोलॉजी शूटिंग और नेविगेशन को फास्ट बनाता है. M11 कैमरा 4.5 फ्रेम पर सेकंड पर लगातार शूटिंग कर सकता है. यह पहला M ग्रेड कैमरा है जो इलेक्ट्रिक शटर के साथ आता है. यह शटर 1/16,000 सेकंड की शटर स्पीड को सपोर्ट करता है. Leica ने M11 के लिए Vi-soflex 2 को भी रिफ्रेश किया है. इसके ईवीएफ में सुधार करते हुए 3.7MP का उच्च रिज़ॉल्यूशन है. EVF लो-एंगल शूटिंग के लिए 90 ऊपर की ओर झुकता है और इसमें एडजस्टेबल -4 से +3 डायोप्टर है. कैमरे में अल्ट्रा-वाइड, टेलीफोटो और मैक्रो लेंस जैसे फीचर्स दिए गए हैं. कैमरे को M11 हैंडग्रिप एसेसरीज के साथ पेश किया गया है. इसमें बिल्ट-इन Arca-स्टाइल माउंट दिया गया है. साथ ही M11 थंब सपोर्ट, M11 प्रोटेक्टर केस दिया गया है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर >> शुक्रवार, 28 जनवरी, 2022

ज़िम्मेदार कौन ?

26 जनवरी 2022 में देश कदम रख रहा है। भारतीय संविधान को लागू हुए 73वां वर्ष शुरू हो गया है। लेकिन महिला सशक्तिकरण आज भी खोखला है। जिस देश में महिला सशक्तिकरण पर हर दिन हर क्षण काम होता हो वहाँ आये दिन महिला उत्पीड़न और बलात्कार जैसे जघन्य अपराध एक बड़ा प्रश्न खड़ा करते हैं। परिवार हो या प्रशासन यह बेटियों के लिए संरक्षक की भूमिका में है लेकिन फिर भी यह कौन सी महामारी है जिसकी वैक्सीन लगातार फैल हो रही है। राजस्थान के गत दिवसों के पन्नों को अगर पलटा जाए तो सोशल मीडिया हो या इलेक्ट्रोनिक मीडिया, अख़बार हो या आसपास की ही ख़बरें दिल दहला जाती हैं। इन सबके लिए ज़िम्मेदार कौन हैं अब तक इस प्रश्न का ज़वाब नहीं मिल पाया है। जिस संविधान के लागू होने का जश्न हम मना रहे हैं वह विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है जिसमें महिलाओं को भी बराबरी का अधिकार देने का हवाला दिया गया है। आइए जानते हैं संविधान में महिलाओं को दिए गए कुछ अनुच्छेदों के बारे में-

श्रद्धांजलि

30 जनवरी महात्मा गाँधी पुण्यतिथि एवं शहीद दिवस

हिलव्यू समाचार परिवार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि एवं देश की रक्षा के लिए शहीद हुए जवानों के स्मृति (शहीद दिवस) पर अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है...

शालिनी श्रीवास्तव

अनुच्छेद 51 (3) के मूल कर्तव्य के अंतर्गत भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें, जो धर्म, भाषा व प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो। ऐसी प्रथाओं का त्याग करें, जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है।

भारतीय संविधान भारत की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय धरोहर है। 26 जनवरी 1950 का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। इसी दिन देश सदियों की दासता व उतार-चढ़ाव के पश्चात नए गणराज्य के रूप में उभरकर आया। मूल अधिकारों का उद्गम स्वतंत्रता का संघर्ष है। मूल अधिकार ऐसे आधारभूत अधिकार होते है, जो मनुष्य का चहुंमुखी विकास करते हैं।

भारतीय संविधान के अंतर्गत महिलाओं को कई सांविधानिक अधिकार प्रदान किए गए हैं, जो निम्नानुसार हैं-

अनुच्छेद 14, 15 समता का अधिकार वर्णित करता है कि ये सभी व्यक्तियों पर समान रूप से लागू होते हैं, चाहे वे नागरिक हो या गैरनागरिक।

अनुच्छेद 15 धर्म, जाति, लिंग मूल वंश व जन्म स्थान समानता के आधार हैं। अनुच्छेद 15 (3) स्त्रियों के लिए विशेष उपबंध है।

अनुच्छेद 16 लोक सेवाओं में अवसर की समानता का अधिकार प्रदान करता है।

अनुच्छेद 23 मानव दुर्व्यवहार, बेगार, बलात् श्रम आदि का प्रतिषेध करता है।

स्त्रियों का अनैतिक व्यापार मानव दुर्व्यवहार का ही एक रूप है। 'स्त्री तथा लड़की अनैतिक व्यापार दमन अधिनियम 1956' पारित किया गया जिसके अंतर्गत मानव दुर्व्यवहार एक दंडनीय अपराध घोषित किया गया।

अनुच्छेद 39 राज्य द्वारा अनुसरणीय कतिपय नीति-निर्देशक तत्व के अंतर्गत सभी नागरिकों के लिए जीविका के पर्याप्त साधनों की उपलब्धि, स्त्रियों को समान कार्य के लिए पुरुषों के बराबर वेतन, स्त्रियों की शोषण से रक्षा आदि अधिकारों से महिलाओं को गरिमामय जीवन-यापन को प्रेरित करता है।

अनुच्छेद 42 काम की न्यायसंगत और मानवोचित दशाएं सुनिश्चित करता है अर्थात स्त्री से कठोर परिश्रम वाला काम न लेना, खतरनाक मशीनों पर कार्य न करवाना, अत्यधिक समय तक काम न करवाना आदि।

अनुच्छेद 51 (3) के मूल कर्तव्य के अंतर्गत भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें, जो धर्म, भाषा व प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो। ऐसी प्रथाओं का त्याग करें, जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है।

अनुच्छेद 243 (घ) में महिलाओं के लिए पंचायतों के अंतर्गत कतिपय स्थान आरक्षित किए गए हैं। अध्यक्षों के एक तिहाई स्थान महिलाओं के लिए आरक्षित होंगे।

समय-समय पर संविधान में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने के लिए संशोधन किए जाते रहे हैं, क्योंकि इस पुरुष-प्रधान समाज में महिलाओं के साथ लैंगिक आधार पर किए जा रहे भेदभाव को समाप्त करने के लिए उनके अधिकारों को न केवल सुनिश्चित करना जरूरी है बल्कि उन अधिकारों का क्रियान्वयन भी आवश्यक है।

भारतीय दंड संहिता में महिला सुरक्षा के अधिकार का संक्षिप्त विवरण

भारतीय दंड संहिता कानून महिलाओं को एक सुरक्षात्मक आवरण प्रदान करता है ताकि समाज में घटित होने वाले विभिन्न अपराधों से वे सुरक्षित रह सकें। भारतीय दंड संहिता में महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों अर्थात हत्या, आत्महत्या हेतु प्रेरण, दहेज मृत्यु, बलात्कार, अपहरण एवं व्यपहरण आदि को रोकने का प्रावधान है। उल्लंघन की स्थिति में गिरफ़्तारी एवं न्यायिक दंड व्यवस्था का उल्लेख इसमें किया गया है। इसके प्रमुख प्रावधान निम्नानुसार हैं-

भारतीय दंड संहिता की धारा 294 के अंतर्गत सार्वजनिक स्थान पर बुरी-बुरी गालियाँ देना एवं अश्लील गाने आदि गाना जो कि सुनने पर बुरे लगें, धारा 304 बी के अंतर्गत किसी महिला की मृत्यु उसका विवाह होने की दिनांक से 7 वर्ष की अवधि के अंदर उसके पति या पति के संबंधियों द्वारा दहेज संबंधी माँग के कारण क्रूरता या प्रताड़ना के फलस्वरूप सामान्य परिस्थितियों के अलावा हुई हो, धारा 306 के अंतर्गत किसी व्यक्ति द्वारा किए गए कार्य (दुष्प्रेरण) के फलस्वरूप की गई आत्महत्या, धारा 313 के अंतर्गत महिला की इच्छा के विरुद्ध गर्भपात करवाना, धारा 314 के अंतर्गत गर्भपात करने के उद्देश्य से किए गए कृत्य द्वारा महिला की मृत्यु हो जाना, धारा 354 के अंतर्गत महिला की लज्जाशीलता भंग करने के लिए उसके साथ बल का प्रयोग करना, धारा 363 के अंतर्गत विधिपूर्ण संरक्षण से महिला का अपहरण करना, धारा 364 के अंतर्गत हत्या करने के उद्देश्य से महिला का अपहरण करना, धारा 366 के अंतर्गत किसी महिला को विवाह करने के लिए विवश करना या उसे भ्रष्ट करने के लिए अपहरण करना, धारा 371 के अंतर्गत किसी महिला के साथ दास के समान व्यवहार, धारा 372 के अंतर्गत वैश्यावृत्ति के लिए 18 वर्ष से कम आयु की बालिका को बेचना या भाड़े पर देना। धारा 373 के अंतर्गत वैश्यावृत्ति आदि के लिए 18 वर्ष से कम आयु की बालिका को

ऐसे प्रकरणों का विचारण न्यायालय द्वारा बंद कमरे में धारा 372 (2) द.प्र.सं. के अंतर्गत किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 'बलात्कार करने के आशय से किए गए हमले से बचाव हेतु हमलावर की मृत्यु तक कर देने का अधिकार महिला को है' (धारा 100 भा.द.वि. के अनुसार), दूसरी बात साक्ष्य अधिनियम की धारा 114 (ए) के अनुसार बलात्कार के प्रकरण में न्यायालय के समक्ष पीड़ित महिला यदि यह कथन देती है कि संभोग के लिए उसने सहमति नहीं दी थी, तब न्यायालय यह मानेगा कि उसने सहमति नहीं दी थी। इस तथ्य को नकारने का भार आरोपी पर होगा।

खरीदना, धारा 376 के अंतर्गत किसी महिला से कोई अन्य पुरुष उसकी इच्छा एवं सहमति के बिना या भयभीत कर सहमति प्राप्त कर अथवा उसका पति बनकर या उसकी मानसिक स्थिति का लाभ उठाकर या 16 वर्ष से कम उम्र की बालिका के साथ उसकी सहमति से दैहिक संबंध करना या 15 वर्ष से कम आयु की लड़की के साथ उसके पति द्वारा संभोग, कोई पुलिस अधिकारी, सिविल अधिकारी, प्रबंधन अधिकारी, अस्पताल के स्टाफ का कोई व्यक्ति गर्भवती महिला, 12 वर्ष से कम आयु की लड़की जो उनके अभिरक्षण में हो, अकेले या सामूहिक रूप से बलात्कार करता है, इसे विशिष्ट श्रेणी का अपराध माना जाकर विधान में इस धारा के अंतर्गत कम से कम 10 वर्ष की सजा का प्रावधान है।

ऐसे प्रकरणों का विचारण न्यायालय द्वारा बंद कमरे में धारा 372 (2) द.प्र.सं. के अंतर्गत किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 'बलात्कार करने के आशय से किए गए हमले से बचाव हेतु हमलावर की मृत्यु तक कर देने का अधिकार महिला को है' (धारा 100 भा.द.वि. के अनुसार), दूसरी बात साक्ष्य अधिनियम की धारा 114 (ए) के अनुसार बलात्कार के प्रकरण में न्यायालय के समक्ष पीड़ित महिला यदि यह कथन देती है कि संभोग के लिए उसने सहमति नहीं दी थी, तब न्यायालय यह मानेगा कि उसने सहमति नहीं दी थी। इस तथ्य को नकारने का भार आरोपी पर होगा।

दंड प्रक्रिया संहिता 1973 में महिलाओं को संरक्षण प्रदान करने की व्यवस्था है। अतः महिलाओं को गवाही के लिए थाने बुलाना, अपराध घटित होने पर उन्हें गिरफ़्तार करना, महिला की तलाशी लेना और उसके घर की तलाशी लेना आदि पुलिस प्रक्रियाओं को इस संहिता में वर्णित किया गया है। इन्हीं वर्णित प्रावधानों के तहत न्यायालय भी महिलाओं से संबंधित अपराधों का विचारण करता है।

धारा 376 क में पुरुष द्वारा अपनी पत्नी के साथ पृथक्करण के दौरान संभोग करने पर 2 वर्ष का कारावास अथवा सजा या दोनों।

पिछले दशक से महिलाओं की सुरक्षा के लिए जो कानूनी कवच दिया गया है, वह नई चुनौतियों के आगे अपने को लाचार पा रहा है। ये कानून ठीक तरह से लागू हों, इसके लिए सजग रहना होगा। लेकिन आने वाली सदी में महिलाओं की जगह क्या हो, इस बारे में एक समग्रदृष्टि विकसित करनी होगी। आज आवश्यकता जरूरत से ज्यादा कानूनों के थोड़े से पालन की नहीं, बल्कि थोड़े से कानून के अच्छी तरह पालन करने की है।

कानून कहता है कि-

* पुरुष व स्त्री को समान कार्य के लिए समान वेतन मिले
* महिला कर्मचारियों के लिए पृथक शौचालय व स्नानगृहों की व्यवस्था हो
* किसी महिला के साथ दास के समान व्यवहार नहीं किया जा सकता
* बलात्कार के आशय से किए गए हमले से बचाव हेतु हत्या तक का अधिकार महिला को है
* विवाहित हिन्दू स्त्री अपने धन की निरंकुश मालिक है, वह उसे जैसे चाहे खर्च कर सकती है।
* दहेज लेना व देना दोनों ही अपराध है

धारा 47 (बी) के अंतर्गत यदि किसी मकान में या उसके किसी भाग में ऐसी महिला का निवास है जिसकी गिरफ़्तारी नहीं की जानी हो तो गिरफ़्तार करने वाला अधिकारी, उस महिला से, उस मकान या स्थान से हट जाने के लिए आग्रह करेगा या उसे जाने देगा। धारा 51 (1) (2) के अंतर्गत गिरफ़्तार किए गए व्यक्ति की तलाशी विहित नियमों द्वारा ली जा सकेगी किंतु यदि गिरफ़्तार व्यक्ति महिला है तो पूरी शिष्टता के साथ किसी अन्य महिला द्वारा ही तलाशी ली जा सकेगी, धारा 53 (2) के अंतर्गत पुलिस अधिकारी की प्रार्थना पर किसी स्त्री अभियुक्त का शारीरिक परीक्षण किसी महिला चिकित्सा व्यवसायी द्वारा किया जा सकेगा। धारा 98 के अंतर्गत किसी स्त्री या 18 वर्ष से कम आयु की बालिका को विधि विरुद्ध प्रयोजन के लिए रखे जाने या निरुद्ध रखे जाने पर और शपथ पर ऐसा परिवाद किए जाने पर, जिला मजिस्ट्रेट, उपखंड मजिस्ट्रेट या प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट विधि विहित नियमों में उसे स्वतंत्र करने का आदेश दे सकता है। धारा 100 (3) के अंतर्गत यदि कोई महिला अपने पास कोई चीज छिपाती है तथा उसकी जामा तलाशी करना है तो उसकी तलाशी पूरी शिष्टता के साथ अन्य कोई महिला द्वारा ही की जाना चाहिए।

मन्जु माहेश्वरी, वरिष्ठ पत्रकार, जयपुर

महिलाओं के इस ज़ज़्बे को सलाम!

बेहद रोचक है यह बात कि आज से 7 दशक पहले दुनिया के सबसे बड़े लिखित संविधान के निर्माण में देश की महिलाओं ने भी महती भूमिका निभाई थी। संविधान के निर्माण के लिए जो कमेटी बनाई गई थी, उसमें 15 महिलाएं शुमार थीं। इनमें सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी, कमला चौधरी, दुर्गाबाई देशमुख, अम्मू स्वामीनाथन, रेनूका रे, हंसा मेहता, पूर्णिमा बनर्जी जैसे कई नाम थे, जिन्होंने महिलाओं से संबंधित मुद्दों को आगे बढ़ाया। उसके बाद इतने दशकों में अनगिनत महिलाएं आई, जिन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों में कर्मठता या संघर्षशील व्यक्तित्व से कीर्तिमान गढ़े। हज़ारों महिलाओं के इस कामयाब सफ़र को बयान करना हमारे लिए यहां मुमकिन नहीं होगा। बहरहाल, बात करते हैं उन महिलाओं की, जिन्होंने इन दिनों निराशा के दौर में आशा का पथ प्रशस्त किया, अवश्य ही गणतंत्र के मौके पर उन्हें याद किया जाना लाज़िमी होगा।

आर्थिक मंदी में अहम् भूमिकाः गीता गोपीनाथ

दुनिया के दिग्गज़ अर्थशास्त्रियों में शुमार गीता गोपीनाथ ने एक बार फिर से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का मान बढ़ाया है। उन्होंने कोरोना महामारी के दौर में वैश्विक आर्थिक मंदी दूर करने के लिए असाधारण काम किया। उन्हें इंटरनेशनल फाइनेंस और माइक्रो इकोनॉमिक्स संबंधित शोधों के लिए जाना जाता है। पूरी दुनिया जब लॉकडाउन से गुजर रही थी, तब उन्होंने दुनिया को आर्थिक मंदी से बाहर निकालने में बड़ी भूमिका निभाई। कोरोना महामारी पर कैसे नियंत्रण किया जाए और पूरी दुनिया में वैक्सीनेशन का लक्ष्य पूरा करने की दिशा में कैसे बढ़ा जाए, इसकी योजना बनाने में गीता गोपीनाथ ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके वर्क प्लान पर ही आईएमएफ, वर्ल्ड बैंक, डब्ल्यूटीओ और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक साथ मिलकर मल्टी लेटरल टास्क फोर्स तैयार किया था और वैक्सीन निर्माण से लेकर उसके डिस्ट्रिब्यूशन तक की समस्याएं दूर हुईं। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने गीता गोपीनाथ की भूमिका को रेखांकित किया और गीता को चीफ इकोनॉमिस्ट बनाने का प्रस्ताव था। अब आईएमएफ ने फ्रांस के इकोनॉमिस्ट पियर ऑलिवर गॉरिचेंज को नया चीफ इकोनॉमिस्ट चुना है। इधर गीता को आईएमएफ की मैनेजमेंट टीम की पहले डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर की ज़िम्मेदारी दी जा रही है। कोलकाता में जन्मीं गीता ने क्रिप्टोकरेंसी को विनियमित करने पर जोर देते हुए कहा कि इस पर प्रतिबंध लगाना चुनौतीपूर्ण होगा, क्योंकि वे विदेशी बाजारों से संचालित होते हैं।

पर्यावरण और प्रकृति से गहरा नाताः डॉ. कृति करंथ

डॉ. कृति करंथ भारतीय संरक्षणवादी, जीवविज्ञानी वैज्ञानिक और पर्यावरणविद् हैं। हाल ही वह 'वाइल्ड इनोवेटर अवार्ड' जीतने वाली पहली एशियाई और पहली भारतीय महिला बनी हैं । वर्तमान में वह बेंगलुरू स्थित 'सेंटर फॉर वाइल्ड लाइफ स्टडीज' की निर्देशक हैं। उनका जन्म मैंगलोर में ऐसे परिवार में हुआ, जहां सभी को जंगल, जानवर और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का जुनून था। उनके पिता टाइगर बायोलॉजिस्ट हैं और दादा प्रमुख पर्यावरणविद्। कृति का अधिकांश बचपन जानवरों, जंगलों और प्रकृति को देखते हुए बीता। उन्हें यह सब पसंद था, लेकिन शुरू में वह इसमें अपना कॅरियर नहीं बनाना चाहती थीं। बाद में उनका आकर्षण धीरे-धीरे वन्यजीव संरक्षण की ओर होने लगा। उन्होंने पर्यावरण विज्ञान में पीएचडी की। उन्होंने पहली परियोजना 2002 में कर्नाटक में की थी, जहां उन्होंने लोगों के स्वैच्छिक पुनर्वास और आजीविका संबंधी बातों का अध्ययन किया। कृति ने प्रजातियों के विलुप्त होने के पैटर्न, वन्यजीव पर्यटन के प्रभाव, मानव-वन्यजीव संबंध आदि विषयों पर आंकलन करते हुए कई अध्ययन किए हैं। वर्तमान में वे 'वाइल्डसेव' परियोजना पर काम कर रही हैं।

एवरेस्ट पर फहराया तिरंगाः अंशु जमसेनपा

पद्मश्री(2021) से सम्मानित अंशु जमसेनपा दुनिया की पहली ऐसी महिला हैं, जिन्होंने महज पांच दिनों में दो बार एवरेस्ट फतह किया। अरुणाचल प्रदेश के बोमडिला की रहने वाली अंशु की स्कूल में पढ़ते-पढ़ते शादी कर दी गई । अंशु कहती हैं, 'साल 2008 में हमारे यहां एक कैंप लगा था, जिसमें कई माउंटेनियर आए थे। वहां मैंने पार्टिसिपेट किया। वहां आए माउंटेनियर्स ने मेरी फिटनेस और एक्टिविटी को देखते हुए कहा कि आपको माउंटेनियरिंग में आना चाहिए। फिर मैंने इसे जूनून बना लिया।' 2009 में उन्होंने माउंटेनियरिंग की प्रोफेशनल ट्रेनिंग शुरू कर दी। बेसिक कोर्स के बाद एडवांस कोर्स किया। 2011 में पहली समिट थी, तब पैसों की दिक्कत आई। इसके लिए उन्हें अपनी पुश्तैनी जमीन बेचनी पड़ी । 2011 में दो बार, 2013 में एक बार और 2017 में फिर दो बार एवरेस्ट फतह किया। 2017 में महज 5 दिन में दो बार एवरेस्ट फतह करने वाली वे दुनिया की महिला थीं।

ज़रूरतमंदों के लिए खोला को-ऑपरेटिव बैंकः लाखिमी बरुआ

असम जिले के जोरहाट की रहने वाली लाखिमी बरुआ को साल 2021 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। लाखिमी ने गरीब और अशिक्षित महिलाओं के हित के लिए 'कनकलता महिला अर्बन कोऑपरेटिव बैंक' बनाया। 1973 में शादी के बाद लाखिमी ने ग्रेजुएशन पूरा कर डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक में अकाउंट मैनेजर के पद पर काम किया। यहाँ उन्हें एक बात जो सबसे अधिक परेशान कर रही थी, वह यह थी कि गरीब और अशिक्षित महिलाओं को कर्ज के लिए घंटों तक लाइन में खड़ा होना पड़ता था और नंबर आने पर डाक्यूमेंट्स नहीं होने के कारण वे खाली हाथ रह जाती थीं। आख़िरकार उन्होंने 1990 में कनकलता महिला अर्बन कोऑपरेटिव बैंक (KMUCB) की शुरुआत की। हालाँकि इस बैंक के रजिस्ट्रेशन के लिए भी उन्हें 8 साल लम्बा इंतज़ार करना पड़ा। इसके बाद 2000 में रिजर्व बैंक का 'कमर्शियल बैंकिंग' संबंधी लाइसेंस उन्हें मिला।

भारतीय मूल के कॉरपोरेट बॉसेज में एक और नाम : लीना नायर

अगर आप फैशन जगत से वाक़िफ़ हैं, तो आपने लग्ज़री फैशन ब्रांड शनैल (Chanel) का नाम ज़रूर सुना होगा। 52 वर्षीय लीना नायर अब इस फ्रेंच कंपनी की ग्लोबल चीफ एग्ज़ीक्यूटिव बन गई हैं। वह भारत में जन्मी पेप्सिको की पूर्व सीईओ इंदिरा नूई को अपनी मेंटर बताती हैं। लीना नायर इसी महीने लंदन में अपनी ज़िम्मेदारी संभाल रही हैं। लीना यूनिलीवर में सबसे कम उम्र की मुख्य मानव संसाधन अधिकारी थीं। वह 1992 में एक प्रशिक्षु के रूप में यूनिलीवर की भारतीय सहायक एचयूएल में शामिल हुईं। महाराष्ट्र के कोल्हापुर में जन्मी लीना एमबीए की डिग्री हासिल करने के बाद हिंदुस्तान लीवर से जुड़ीं। भारत में जन्मीं, ब्रिटिश नागरिक लीना ने इससे पहले ब्रिटेन की सरकार में बिजनेस, एनर्जी और इंडस्ट्रियल स्ट्रैटजी डिपार्टमेंट के लिए नॉन-एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर के पद पर भी अपनी सेवाएं दी हैं। दिलचस्प है यह जानना कि शनैल की स्थापना 1910 में फैशन लीजेंड गैब्रियल कोको शनैल ने पेरिस में की थी, जो आगे चलकर दुनिया भर में ट्वीट सूट्स, क्विलटेड हैंडबैग्स और नंबर 5 परफ्यूम के क्षेत्र में फैशन का पर्याय बन गया।

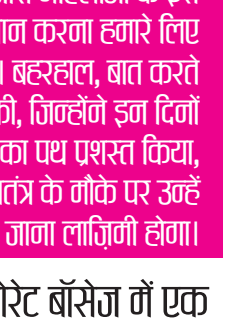

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

भारत का गणतंत्र देता है हमें - अधिकार

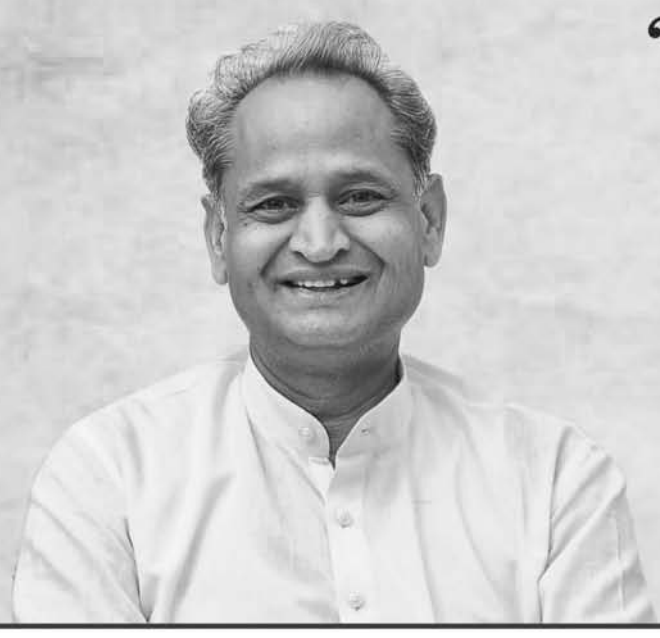

"भारत के गणतंत्र ने सबको स्वतंत्रता से जीने का अधिकार दिया है। अधिकार - वोट देने का, अपनी बात कहने का, अपने धर्म और सम्प्रदाय को बिना किसी दबाव के मानने का। अधिकार - भारतीय कहलाने का।

नागौर (राजस्थान) से 2 अक्टूबर, 1959 को देश में पंचायती राज की शुरुआत की गई। जिससे नागरिकों को अधिकार मिला कि वे गाँव के स्तर पर अपनी सरकार चुन सकें।

इसी क्रम में बीते दिनों में राज्य सरकार ने दिया आपको - स्वास्थ्य सेवाओं का अधिकार, FIR दर्ज कराने का अधिकार एवं उड़ान योजना के माध्यम से 15 से 55 वर्ष की महिलाओं को स्वस्थ-स्वच्छ रहने का अधिकार। खाद्य सुरक्षा का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार (RTI) एवं माता-पिता के भरण-पोषण के अधिकार से तो नागरिक पहले से ही लाभान्वित हो रहे हैं।

नागरिकों को और भी अधिकार मिलें, जिससे वे सशक्त हों। यह हमारा ध्येय है।

73वें गणतंत्र दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।"

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

आज भी विभिन्न चुनौतियों से गुज़र रहा है हिंदुस्तान

क़ानून व व्यवस्था राजनीतिक शरीर की दवा है और जब राजनीतिक शरीर बीमार पड़ने लगे तो दवा जरुर देनी चाहिए: बी. आर. अम्बेडकर

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
युवा लेखक, शोधार्थी

विश्व के रंगमंच पर पहला गणतंत्र देने वाले देश भारत में संविधान लागू हुए 72 साल हो चुके हैं। 26 जनवरी 1950 का वह स्वर्णिम दिवस जब ब्रिटिश हुकुमत में वर्षो तक घुटने के बाद भारतीयों ने अपना ऐतिहासिक संविधान तैयार कर लिया था। संविधान सभा में तत्कालीन समय के भारत के समक्ष उत्पन्न सभी चुनौतियों को स्मरण रखते हुए विभिन्न अनुच्छेदों के द्वारा भारत में सुचारू रूप से शासन चलाने के लिए संविधान का निर्माण किया गया।

भारत आज लोकतंत्र की मशाल जलाते हुए दुनिया में आशा-उमंग, शांति के आकर्षण का केंद्र बिंदु बन गया है। आजादी को संजोए रखना इतना भी आसान नहीं होता। इसके लिए नियम, नीति और योजनाएं बनाना और उनको क्रियान्वित करना बहुत ही ज़रुरी था। जिसके लिए भारत के संविधान की रचना करना और उस संविधान में नियम कानून और शर्तों को लागू करना बहुत आवश्यक था। इसके लिये एक समिति बनाई गई और उस समिति के द्वारा संविधान का निर्माण किया गया। इस दिन हर भारतीय को अपने देश में शांति, सौहार्द और विकास के लिये संकल्पित होना चाहिए। कर्तव्य-पालन के प्रति सतत जागरूकता से ही हम अपने अधिकारों को निरापद रखने वाले गणतंत्र का पर्व सार्थक रूप में मना सकेंगे और तभी लोकतंत्र और संविधान को बचाए रखने का हमारा संकल्प साकार होगा।

संविधान के बारे में संविधान निर्माता भीमराव अंबेडकर कहते हैं-मुझे लगता है यह संविधान व्यावहारिक है, ये शांति और युद्ध दोनों के समय देश को बांधे रखने के लिए लचीला भी है और मज़बूत भी। स्पष्ट है कि भारत ने एक ऐसे संविधान का निर्माण किया था जिस पर हर भारतीय को गर्व होना चाहिए। आज की तारीख में भारत गणतंत्र गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, इनमें कुछ चुनौतियां भारतीय गणतंत्रात्मक लोकतंत्र के जन्म के साथ ही उपस्थित रही हैं, कुछ नई चुनौतियां और आ खड़ी हुई हैं। गणतंत्र के सूरज को राजनीतिक अपराधों, घोटालों और भ्रष्टाचार के बादलों ने घेर रखा है। हमें किरण-किरण जोड़कर नया सूरज बनाना होगा। हमने जिस संपूर्ण संविधान को स्वीकार किया है, उसमें कहा गया है कि हम एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य हैं।

भविष्य में भारतीय गणतंत्र के सामने आने वाली चुनौतियों को संविधान सभा के समक्ष संविधान प्रस्तुत करते हुए डॉ. अंबेडकर ने कहा था - 'हम लोकतांत्रिक प्रणाली के रूप में राजनीतिक समता के युग में प्रवेश कर रहे हैं, लेकिन सामाजिक और आर्थिक समता प्राप्त करने में असफल रहते हैं, तो हमारा लोकतंत्र भी ख़तरे में पड़ सकता है।' यह बात उन्होंने दुनिया भर के लोकतंत्र के अनुभवों के आधार कही थी । लोकतांत्रिक देश में सामाजिक-आर्थिक असमानता बनी रहती है तो राजनीतिक समता को भी निगल लेती है, भले ही औपचारिक और कानूनी तौर पर राजनीतिक समता बरकरार रहे। आज का भारत काफी हद तक इसकी पुष्टि करता है ।

आज हमारा संविधान विभिन्न बीमारियों से ग्रसित हो गया है। भ्रष्टाचार, बलात्कार, प्रदूषण, जनसंख्या नियंत्रण जैसे अनेक समस्याओं ने भारत माँ को लहूलुहान कर दिया है। आज भी हमारा गणतंत्र कितनी ही कंटीली झाड़ियों में फँसा हुआ प्रतीत होता है। अनायास ही हमारा ध्यान गणतंत्र की स्थापना से लेकर 'क्या पाया, क्या खोया' के लेखे-जोखे की तरफ खींचने लगता है। इस ऐतिहासिक अवसर को हमने मात्र आयोजनात्मक स्वरूप दिया है, अब इसे प्रयोजनात्मक स्वरूप दिये जाने की जरूरत है। बी. आर. अम्बेडकर ने भी समस्याओं के समाधान हेतु कानून लाने के बारे में कहा था- 'क़ानून व व्यवस्था राजनीतिक शरीर की दवा है और जब राजनीतिक शरीर बीमार पड़ने लगे तो दवा जरुर देनी चाहिए।'

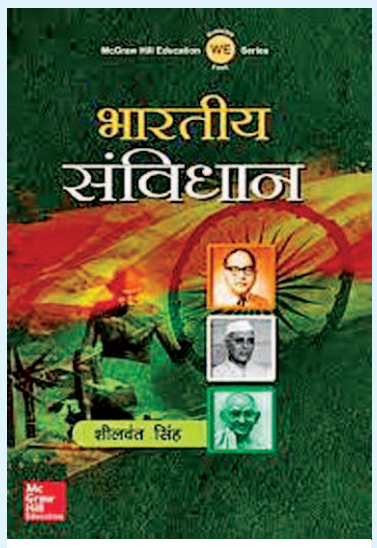

अपनी ममता से देश का बचपन संवारने वाली महिलाओ के साथ हो रहे अनेक प्रकार की हिंसा से उन्हें घायल कर दिया जाता है। एक तरफ लड़कियां भारत का नाम विश्व मंच पर रोशन कर रही हैं तो वहीं दूसरी ओर महिलाओं का बलात्कार किया जाता है, तेजाब फेंक उन्हें झुलसाया जाता है और दहेज के लिए मार दिया जाता है। क्या सच में संविधान में जो अधिकार महिलाओं को मिले हैं वह अधिकार क्या उनको अब तक मिल पाया है? आख़िर विवशता की आग में कब तक जलती रहेगी महिलाएं! तमाम चीज़ें सवाल बनकर संविधान के समक्ष खड़ा है। कब तक महिलाओं को वो सामाजिक अधिकार मिलेगा जो संविधान ने दिए हैं ?

संविधान लागू होने के सात दशक बाद भी हमारे संविधान के तीन आधारभूत स्तम्भों विधायिका , कार्यपालिका और न्यायपालिका पर भ्रष्टाचार का काला साया मंडरा रहा है। पूरी व्यवस्था प्रदूषित होती जा रही है। आज आज़ाद हुए सात दशक पार कर गए हैं हम, अब तक हमने बहुत कुछ हासिल किया है, वहीं एक ओर हमारे कुछ संकल्पों में बहुत कुछ आज भी आधे-अधूरे सपनों की तरह है।

राजनीतिक व्यवस्था से समाज में चुस्त, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित कानून बनाया जाए और प्रत्येक नागरिक चाहे जो कोई हो, गरीब हो या अमीर, सेवादार या किसान सब अपनी प्रत्यक्ष संपत्ति जायदाद का खुलासा करें कि जो भी चल-अचल धन है, वही है और अप्रत्यक्ष कहीं भी देश या विदेश में मिलने पर ज़ब्त होगा तो सज़ा मिलेगी। हमारी ज़्यादातर प्रतिबद्धताएं व्यापक न होकर संकीर्ण होती जा रही हैं जो कि राष्ट्रहित के खिलाफ हैं। राजनैतिक मतभेद भी नीतिगत न रह कर व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। जनतंत्र-गणतंत्र की प्रौढ़ता को हम पार कर रहे हैं लेकिन आम जनता को उसके अधिकार, कर्तव्य, ईमानदारी समझाने में पिछड़े, कमजोर, गैर जिम्मेदार साबित हो रहे हैं। चूंकि स्वयं समझाने वाला प्रत्येक राजनीतिक पार्टी और उसके नेता स्वयं ही कर्तव्य, ईमानदारी से अछूते व गैर-जिम्मेदार हैं। इसलिए असमानता की खाई गहराती जा रही है और असमानता की बराबरी बढ़ गई है। जबकि बराबरी के आधार पर ही समाज की उत्पत्ति हुई थी।

संविधान लागू होने के सात दशक बाद भी हमारे संविधान के तीन आधारभूत स्तम्भों विधायिका , कार्यपालिका और न्यायपालिका पर भ्रष्टाचार का काला साया मंडरा रहा है। पूरी व्यवस्था प्रदूषित होती जा रहा है। आज आजाद हुए 7 दशक पार कर गए , अब तक हमने बहुत कुछ हासिल किया है , वहीं हमारे इन संकल्पों में बहुत कुछ आज भी आधे-अधूरे सपनों की तरह हैं। भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, सांप्रदायिक वैमनस्यता, कानून-व्यवस्था, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं जैसे तमाम क्षेत्र हैं जिनमें हम आज भी अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पाए हैं। हाल फिलहाल में नई शिक्षा नीति के अंतर्गत मातृभाषा को लेकर शिक्षा क्षेत्र में चर्चा शुरू होती रही है, तो दशकों से अनुत्तरित सवाल फिर सामने खड़ा होता है कि हमारी राष्ट्रभाषा कौन-सी है? अफसोस इस बात का है कि इसके जवाब में हमारी सरकार मौन धारण कर लेती है। इसका जवाब न ही जनता के पास है और न ही सरकार के पास। क्योंकि विविधताओं के इस देश मे भाषाओं के विविधता भी देश के सांस्कृतिक ख़ूबसूरती में चार चांद लगाता है। संविधान ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो दे दिया लेकिन उसे राष्ट्रभाषा बनाने का सपना अभी भी अधूरा है। राष्ट्रभाषा का जबाब अब भी वक्त के गर्भ में छुपा हुआ है।

समस्याओं की कड़ी में भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में पर्यावरणीय समस्याएं मुँह बाए खड़ी हैं। पर्यावरण प्रदूषण पृथ्वी के प्राणियों के मानवता को मंथित कर रहा हैं। यह स्थानीय ही नहीं बल्कि विश्व व्यापी समस्या बन कर पृथ्वी को ही नष्ट कर रही है। भारत का संविधान और कानून पर्यावरण संरक्षण की भी बात करता है, जरूरत है इस पर अमल करने की। मनुष्य और पृथ्वी को बचाने के लिए उस परम्परा की ओर लौटना होगा, जहाँ मनुष्य और प्रकृति में सामंजस्य हों, विरोध नहीं । जीवन दृष्टि प्रकृति के विवेकशील इस्तेमाल की हो, लूट खसोट की नहीं। पर्यावरण की संस्कृति पर आधारित जीवन पद्धति और जीवन दृष्टि की ओर लौटने की जरूरत होगी।

संविधान हमारे लोकतंत्र का मार्गदर्शक है, तो चुनाव इस लोकतंत्र का आधार तैयार करता है और इस आधार को मजबूत करने के लिए आजाद भारत कई चुनाव सुधारों का गवाह बन चुका है। सार्वभौमिक मताधिकार , नोटा का विकल्प, महिलाओं और सामाजिक रूप से निर्बल समूहों के लिए चुनावों में आरक्षण जैसी कई पहल से हमने अपनी चुनाव प्रणाली को सुधारने के प्रयास किए हैं, लेकिन 17 आम चुनाव और सैकड़ों विधानसभा चुनावों के वाद भी काले धन, चुनावी हिंसा, राजनीति के अपराधीकरण, ओपिनियन पोल, पेड न्यूज, फेक न्यूज, चुनावी धांधलियां जैसी चुनौतियां आज भी विद्यमान हैं। ईवीएम की जगह वैलट पेपर का तर्क इस आधार पर जोर पकड़ रहा है कि कई चरणों में हो रहे मतदान से लंबी होती जा रही चुनाव प्रक्रिया में ईवीएम की समय बचाने वाली उपयोगिता के कोई खास मायने नहीं रह गए हैं। चुनाव खर्च काफ़ी महंगा हो चुका है जिसका समाधान निकालना भी ज़रूरी हो गया है। इसका समाधान वन नेशन, वन चुनाव से किया जा सकता है। जिस पर आये दिन विचार - विमर्श होते रहता है।

सामाजिक सौहार्दपूर्ण संस्कृति भारत की अतीत से ही इतिहास रहा है । आज जिस तरस से नागिरकता बिल के विरोध में देश जल रहा है और सरकार द्वेष को खत्म करने में नाकाम है वो भी एक प्रकार से साम्प्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ रहा है जो कि देश के संविधान की मूल भावना पर चोट है। समाजवादी मूल्यों से प्रभावित एक समतावादी समाज की कल्पना और उसे तैयार करने के हमारे संकल्प सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक तीनों स्तर पर अब तक पूर्णतः सफल नहीं रहे। सामाजिक न्याय के लिए कदम तो उठाए पर सामाजिक सौहार्द बनाए रखने की जरूरत को भूल कर। हमने सिर्फ और सिर्फ आरक्षण की राजनीति से सामाजिक न्याय को परिभाषित करना चाहा। नतीजतन, समाज टुकड़े-टुकड़े में विखंडित हो गया। एक कवि की पंक्ति में - 'आकाश का आँचल सितारा ही रहेगा , यह देश है हमारा, हमारा ही रहेगा।'

मैं भारत माँ की बेटी हूँ..

मीनाक्षी माथुर, जयपुर

मैं भारत माँ की बेटी हूँ ,
माता का वंदन करती हूँ।
आजादी की मैं पोषक हूँ ,
बंधन का खंडन करती हूँ।
राम को पूजो मंदिर में,
नमाज़ पढ़ो तुम मस्जिद में ,
अरदास करो गुरुद्वारों में,
यीशु को पूजो चर्चों में ,
गंगा-जमुनी तहज़ीब मैं मानूं ,
पाखंड का खंडन करती हूँ ,
जात-पात ना मानू मैं,
मानव का वंदन करती हूँ।
मैं भारत माँ की बेटी हूँ......
महल दुमहले चौड़ी सड़कें
सब पर पूंजीवाद चढ़ा ,
फुटपाथों पर पलता बचपन,
सत्ता पर भ्रष्टाचार चढ़ा ,
मैं लोकतंत्र की धारक हूँ ,
भ्रष्टों का खंडन करती हूँ ,
जात-पात ना मानू मैं,
मानव को वंदन करती हूँ।
मैं भारत माँ की बेटी ....
राग-द्वेष, हिंसा, उत्पीड़न ,
से तुम क्या सुख पाते हो ,
ये तेरा है ये मेरा है ,
करके क्या पा जाते हो ,
वसुधैव-कुटुम्ब है सीखा मैने,
खण्डों का खंडन करती हूँ ,
जात-पात ना मानू मैं,
मानव का वंदन करती हूँ।
मैं भारत माँ की बेटी हूँ......

व्यंग्य

सुनामी

उमाकांत भारती
भागलपुर बिहार

भुखमरी अपना वार्षिक रिपोर्ट कार्ड लेकर शैतान के आगे नतमस्तक खड़ी थी। शैतान ने फटकार लगाते हुए उसे 'डी- ग्रेड' दिया।

तुम्हारी प्रगति रिपोर्ट इतनी खराब क्यों है? आधी आबादी तुम्हारे गिरफ़्त से अभी तक बाहर क्यों है?

शैतान जी! आधा पेट खाकर भी गरीब-गरूआ पेट बांधकर चुपचाप पड़े रहते हैं, क्योंकि संतोष ने गरीबों को संतोषी बना दिया है। भुखमरी ने संतोष को भद्दी गालियां देते हुए कहा।

हूं...। कहते हुए शैतान ने अपने महाबली योद्धा, भ्रष्टाचार को तत्क्षण तलब किया।

वह भूखमरी की अपेक्षा अधिक मोटा और तगड़ा हो गया था। शैतान से भी अधिक! उसके शरीर के पौर-पौर से जवानी की ज्वाला धधक रही थी। उसके योद्धा रोबोट यानी लोभ, क्षुद्ध स्वार्थ , अपराध और व्यभिचार उसके आजू-बाजू खड़े हो गए। उसके पुष्ट शरीर और विनाशकारी हथियार का आंकलन कर शैतान ने उसे 'ए-ग्रेड' दिया और अपने पास के विशेष आसन पर बैठाया।

मेरे आका! मेरे भ्रष्टाचारी - तिलिस्म में पच्चासी प्रतिशत सरकारी लोग कैद हैं। पृथ्वीलोक के धर्मराज और चित्रगुप्त भी मेरी मुट्ठी में हैं। शासक और शासकीय-तंत्र में मेरा विस्तार ग्राम-पंचायत स्तर तक हो चुका है ।

शेष पंद्रह प्रतिशत घुटने क्यों नहीं टेके अब तक?

पुरानी पीढ़ी के कुछ लोग घूस लेते नहीं, लेकिन देते हैं, ऐसे लोग भाई-भतीजावाद और पैरवी सुनने से परहेज़ नहीं करते हैं। ऐसे त्रिशंकु अद्र्ध ईमानदार की औकात ही क्या! ईमानदारी का पूरा सुपड़ा साफ हो ही चुका है। आपका ही राज है। तुम मेरे शैतान -साम्राज्य की रीढ़ हो। मेरे उत्तराधिकारी भी हो तुम! सी बी आई वालों से बचकर रहना जरा। भ्रष्टाचार ने अकड़ कर कहा--

सुनामी को तटबंध रोक सका है क्या?

गणतंत्र दिवस और वर्तमान परिस्थिति

गणतंत्र दिवस आज कह रहा आजादी होने लगी पूरी अब।
एक राष्ट्र का संकल्प लगती हो रही पूरी अब।।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक फहर रहा तिरंगा अब।।
सुभाष सहित सारे राष्ट्रभक्त का सपना हो रहा पूरा अब।
जन-जन में अब लहर खुशी की भारत माता का हो रहा जय घोष।
सैनिक की वह वीर शहादत अब कर रहा है जय घोष ।।
पड़ौस के निर्लज्ज़ता पर अब हँस रहा पूरा विश्व।
देश के अंदर बैठे गद्दारों ने घोलना अपनों में विष।।
अब भी ना सुधरे तो गद्दारों भुगतना होगा बुरा अंज़ाम।
पहले तुम्हारे आक़ा का फ़िर होगा तेरा पूरा इंतज़ाम।।
तुमने खाया नमक भारत का नमक हरामी ही क्यों करते हो।
उस जाहिल अनपढ़ के बहकावे में तुम अपना घर क्यों फूंकते हो।।
अपना तो वह घर फूंक कर हाथ सेकने को तैयार।
तुम्हारे घर भी चिंगारी डालकर तुम्हारा घर भी फूँकने को तैयार।
इतने पर भी समझ नहीं रावण, दुर्योधन, कंस जैसे हैं कुछ लोग।
बोलने की आजादी का कर रहे हैं दुरुपयोग।।
अब इस जैसे राष्ट्रद्रोही से यह अधिकार भी छिन डालो ।
इसके इस जघन्य कृत्य का इसको सबक सिखाओ।।
जनता की बस तीन जरूरत रोटी कपड़ा और मकान।
भारत की उन्नति का बस होता जाए पुख़्ता इंतज़ाम।।
देश सहित पूरे दुनियां में ऊँचा कर दें भारत का नाम।
विश्व गुरु बनने का रास्ता आओ प्रशस्त करें मिलकर श्रीमान।।

कमलेश झा
फ़रीदाबाद, बिहार

दो-दो हिन्दुस्तान...

लाज तिरंगें की रहे, बस इतना अरमान ।
मरते दम तक मैं रखूँ, दिल में हिन्दुस्तान ।।
बच पाए कैसे भला, अपना हिन्दुस्तान ।
बेच रहे हैं खेत को, आये रोज़ किसान ।।
आधा भूखा है मरे, आधा ले पकवान ।
एक देश में देखिये, दो-दो हिन्दुस्तान ।।
सरहद पर जांबाज़ जब, जागे सारी रात ।
सो पाते हम चैन से, रह अपनों के साथ ।।
हम भारत के वीर हैं, एक हमारा राग ।
नफरत गैरत से हमें, जायज से अनुराग ।।
खा इसका, गाये उसे, ये कैसे इंसान ।
रहते भारत में मगर, अंदर पाकिस्तान ।।
भारत माता रो रही, लिए ह्रदय में पीर ।
पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से वीर ।।
भारत माता के रहा, मन में यही मलाल ।
लाल बहादुर-सा नहीं, जनमा फिर से लाल ।।
मैंने उनको भेंट की, दिवाली और ईद ।
जान देश के नाम जो, करके हुए शहीद ।।
घोटालों के घाट पर, नेता करे किलोल ।
लिए तिरंगा हाथ में, कुर्सी की जय बोल ।।
आओ मेरे साथियों, कर लें उनका ध्यान ।
शान देश की जो बनें, देकर अपनी जान ।।

सत्यवान 'सौरभ'
भिवानी, हरियाणा

खुशियों का त्यौहार

पूरे भारत देश में, आया है त्यौहार।
मिलकर सारे बाँटते, आपस में सब प्यार।।
आपस में सब, प्यार बाँट कर, गले लगाते।
देत बधाई, इक दूजे को, मन हर्षाते।।
रैली सारे, बिन बच्चों के, रहे अधूरे।
उड़े तिरंगा, खुशी मनाये, भारत पूरे।।
वीरों को करते नमन, और झुकाते माथ।
सीना ताने जो खड़े, रख बंदूके साथ।।
रख बंदूके, साथ हमेशा, वचन निभाते।
आँख उठा कर, देखे दुश्मन, मार गिराते।।
जान गँवाते, माटी पर वो, असली हीरो।
करे सुरक्षा, सदा हमारी जो, उन वीरो को नमन हमारा।

प्रिया देवांगन,
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

सरकारी नौकरी नहीं, बल्कि देश सेवा कर रहे हैं

सरकारी योजनाओं के ईमानदार क्रियान्वयन पर, कर्तव्य पथ एक इतिहास रचता है

वैश्विक स्तरपर भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और जनसंख्या में द्वितीय क्रमांक पर है। भारत में लोकतंत्र के चार स्तंभ माने जाते हैं न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और चौथा मीडिया। हर स्तंभ अपने अपने कार्यक्षेत्र में सुचारू रूप से कार्य कर अपने अपने स्तरपर नए सकारात्मक आयाम प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। साथियों इन चार स्तंभों में से मेरा मानना है कि कार्यपालिका के ऊपर विधायिका द्वारा लिए गए फैसलों, कानूनों, न्यायपालिका के दिशानिर्देशों, आदेशों और मीडिया द्वारा झूठ से हटाए गए पर्दों और सच्चाई के मुद्दों पर अमल करने की ज़वाबदारी और कर्तव्य कार्यपालिका पर है। याने हम सीधे शब्दों में कहें तो, माने गए चार स्तंभों में से तीनों स्तंभों के निर्णय, सुझाव, दिशानिर्देशों इत्यादि को क्रियान्वयन करना कार्यपालिका की ही जवाबदारी और कर्तव्य है।

उसके बाद कार्यपालिका स्वयं द्वारा सुशासन, लोकहित, दूरगामी इंस्ट्रक्चर इत्यादि अनेक जनहित कार्यक्रमों, सरकारी योजनाओं को क्रियान्वयन की ज़वाबदारी कर्तव्य भी कार्यपालिका को करना होता है जिसका निर्णय शासन द्वारा रणनीतिक रोडमैप बनवाकर लिया जाता है तथा उसे प्रशासन द्वारा क्रियान्वित करने की जवाबदारी संभाली जाती है ऐसी प्रक्रिया की जानकारी जहां तक मुझे है।

साथियों बात अगर हम इन सरकारी योजनाओं, निर्णयों, दिशानिर्देशों इत्यादि को क्रियान्वयन करने की करें तो हमने आम बोलचाल में सुने होंगे कि सरकारी नौकर, सरकारी नौकरी, जनता के सेवक इत्यादि अनेक शब्दों का प्रयोग छोटे से चपरासी, पटवारी से लेकर मंत्रालयों के मुख्य सचिवों तक के पदों के लिए प्रयुक्त होते हैं परंतु मेरा मानना है कि इसके लिए सरकारी सेवक एक बहूसूचक, बहुमूल्य शब्द है इससे बोध होता है कि सेवा करना है और इस सेवा में बहुमूल्य आध्यात्मिक बोध समाया होता है!! जिसका अंतिम स्तरपर अदृश्य सेवाफल ईश्वर अल्लाह से प्राप्त होने की कामना शामिल है, ऐसी मेरी भावना है।

इसलिए हमें यह भावना मन में धारण करना होगा कि हम नौकरी नहीं सेवा कर रहे हैं और सेवा से बोध निस्वार्थ सेवा का निकलता है।

साथियों बात अगर हम सेवाबोध की करें तो इसमें से विस्तृत मात्रा में कर्तव्यबोध की उत्पत्ति होती है जो भ्रष्टाचार, कुरीतियों, गैर वाज़बी कार्यों, घपला, गलतसोच इत्यादि से लड़ने में सशक्त कामकर ईमानदारी के पथपर ले जाता है इसलिए नौकरी को सेवा समझकर सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर कर्तव्य पथ का सहारा हर शासकीय कर्मचारी द्वारा जब लिया जाता है तो एक कर्तव्य पथ का एक इतिहास रचा जाएगा।

साथियों बात अगर हम दिनांक 22 ज़नवरी 2022 को माननीय पीएम द्वारा जिलाधिकारियों के साथ वर्चुअल प्रमुख सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर बातचीत की करें तो पीआईबी और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुसार जिलाधिकारियों ने अपने अनुभव साझा किए जिससे कई संकेतकों पर उनके जिलों के कार्य निष्पादन में सुधार हुआ है। पीएम ने उनसे उन प्रमुख कदमों और उस प्रयास में उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में सीधे तौर पर फीडबैक मांगा, जिनके परिणामस्वरूप जिलों में सफलता मिली है। उन्होंने उनसे यह भी पूछा कि आकांक्षी जिलों के कार्यक्रम के तहत काम करना उनके पहले किए गए काम से कैसे अलग है। अधिकारियों ने बताया कि किस प्रकार जनभागीदारी इस सफलता के पीछे एक महत्वपूर्ण घटक रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने अपनी टीम में काम करने वाले लोगों को दैनिक आधार पर प्रेरित किया और इस भावना को विकसित करने का प्रयास किया कि वे नौकरी नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक सेवा कर रहे हैं। उन्होंने विभागों के बीच समन्वय बढ़ाने और डेटा द्वारा संचालित शासन के लाभों के बारे में भी बताया।

अधिकारियों को संबोधित करते हुए पीएम ने कहा कि जब दूसरों की आकांक्षाएँ, अपनी आकांक्षाएँ बन जाएँ, जब दूसरों के सपनों को पूरा करना अपनी सफलता का पैमाना बन जाए, तो फिर वो कर्तव्य पथ इतिहास रचता है। उन्होंने कहा कि आज हम देश के एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट - आकांक्षी जिलों में यही इतिहास बनते हुए देख रहे हैं।

उन्होंने जोर देकर कहा कि आकांक्षी जिलों में विकास के लिए प्रशासन और जनता के बीच सीधा कनेक्ट, एक इमोशनल जुड़ाव बहुत जरूरी है। एक तरह से गवर्नेंस का 'टॉप टू बॉटम' और 'बॉटम टू टॉप' फ़्लो और इस अभियान का महत्वपूर्ण पहलू है - टेक्नोलॉजी और इनोवेशन। प्रधानमंत्री ने उन जिलों के बारे में भी चर्चा की, जहां कुपोषण, स्वच्छ पेयजल और टीकाकरण जैसे क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी और इनोवेशन के इस्तेमाल से बहुत अच्छी सफलता मिली है। उन्होंने कहा कि सरकार के अलग-अलग मंत्रालयों ने, अलग-अलग विभागों ने ऐसे 142 जिलों की एक लिस्ट तैयार की है जो विकास में इतने पीछे नहीं हैं लेकिन जिन एक-दो पैरामीटर्स पर ये अलग-अलग 142 जिले पीछे हैं, अब वहां पर भी हमें उसी कलेक्टिव अप्रोच के साथ काम करना है, जैसे हम एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट में करते हैं। उन्होंने कहा, ये सभी सरकारों के लिए, भारत सरकार, राज्य सरकार, जिला प्रशासन, जो सरकारी मशीनरी है, उसके लिए एक नया चैलेंज है। इस चैलेंज को अब हमें मिलकर पूरा करना है।

उन्होंने कहा कि जो सिविल सर्विसेस के साथी जुड़े हैं, उनसे मैं एक और बात याद करने को कहूंगा। आप वो दिन जरूर याद करें जब आपका इस सर्विस में पहला दिन था। आप देश के लिए कितना कुछ करना चाहते थे, कितना जोश से भरे हुए थे, कितने सेवा भाव से भरे हुए थे। आज उसी जज्बे के साथ आपको फिर आगे बढ़ना है।

संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ एडवोकेट
किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीय संविधान में बेटियों को ज़ायदाद में बराबरी का हक़

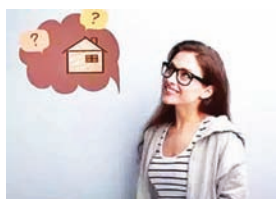

भारत के सविंधान में बेटी भी अपने पिता के जायदाद का बराबर की हक़दार है एक बहन को भी अपने भाई से अपनी हिस्सा लेना ही चाहिए, उन्हें भी फ़र्ज़ बंटवारा लेने की पूर्णतः हक है और सरकार भी इसकी समर्थन करती है, उसके बाद भी जब हक बेटियों की होती तब समाज बेटियों को कुछ नही समझती क्या बेटी हिस्सेदार नही है? क्या बेटियॉ संतान नही है? ऐसी बहुत कम बेटियाँ होंगी जो अपनी हक के लिए आवाज़ उठाती हैं। आख़िर बेटी बोले तो क्या बोले? जो बेटी अपनी हिस्से की बात करती उसे समाज लालची और अनेक अपशब्द के साथ बुरी नज़र से देखते हैं। जब अपनी

अचल संपत्ति ले भी लेती है तब वह अपने मायके के लिए दुश्मन बन जाती है। मायके से रिश्ता टूट जाता है। परिवार के बारे अगर कोई बुरा भी कह दे तो पूरा सर पर उठा लेती हैं, उन्हें कैसा महसूस होता है जब उनका दाना पानी मायके से उठ जाता है। मायके का दरवाजा ही बंद हो जाता है। समाज उस पर दबाव बनाता है कि वह कभी अपने हक की बात न करे। उसे भी डर रहता है कि कही उसके परिवार में खट्टास न आ जाये। सरकार ने जब नियम बनाए हैं भाई और बहन पर सम्पत्ति पर बराबर हक स्वतः ही आ जाना चाहिए। सरकार से अपील है कि ज़मीन, जायदाद में सभी संतानों को बराबर का हक मिले। ऐसे में भाई बहन के बीच होने वाली धोखाधड़ी नहीं होगी। बढ़ते जमीनवाद-विवाद ग्रस्त मामले भी बहुत कम सुनने और देखने को मिलेगें!

लालच के नाम से बहुत अपराध हो रहे हैं। वसीयतनामा, फर्जी रजिस्ट्रेशन और नामांतरण - विवाद ग्रस्त मामले भी हर रोज तहसील न्यायलय में दर्ज हो रहे हैं। अभी, हाल में ही सुप्रीम कोर्ट में भी आदेश पारित हो चुका है कि बेटियों को भी वसीयत में सभी अधिकार होंगे।

कोर्ट मे यह आदेश पारित होना चाहिए कि हर बेटी को उसका अधिकार स्वतः ही उनके नाम पर हस्तांतरित हो जाए।

उत्कर्ष सोनबोइर
भिलाई छत्तीसगढ़

1950 (सुबह 10:18 बजे)

1952 10 करोड़ 59 लाख मतदाताओं ने डाला वोट

1971 पाक का बड़ा हिस्सा जीतकर उसे वापस कर दिया

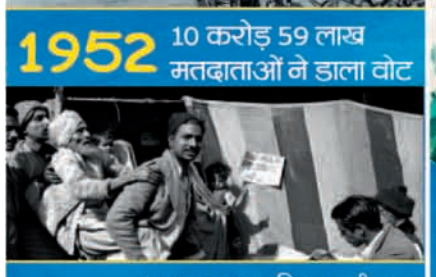

दिन-ब-दिन मजबूत हो रहा है युवा भारत का गणतंत्र

26 जनवरी पर गर्व करने लायक है देश की उपलब्धियों की झांकी

73 वें गणतंत्र दिवस की परेड में दिल्ली और बंगाल जैसे प्रदेशों की झांकियों को शामिल होने का मौका न दिए जाने पर भले कई तरह के मतभेद हों, लेकिन पिछले 73 वर्षों के अपने गणतांत्रिक इतिहास में हिंदुस्तान ने जो अनेक महान उपलब्धियां हासिल की हैं, उनको लेकर किसी तरह का कोई मतभेद नहीं है. निश्चित रूप से ये उपलब्धियां झांकियों से कहीं बड़ी और कहीं ज्यादा भव्य हैं.

वास्तविक उपलब्धियों का यह सिलसिला आजादी के अगले साल ही यानी भारत के गणतंत्र बनने के पहले ही शुरू हो गया था, जब हमने 1948 में लंदन ओलंपिक में हॉकी का स्वर्ण पदक जीता था. आजाद भारत का यह पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक था. इसके पहले हालांकि हम हॉकी में कई स्वर्ण पदक जीत चुके थे और ये लगातार जीते थे. इसके बावजूद जो महत्व 1948 के आजाद भारत के पहले स्वर्ण पदक था, उतना महत्त्व किसी और का नहीं था.

1950: (सुबह 10:18 बजे)

26 जनवरी 1950 को सुबह 10:18 बजे भारत दुनिया के नक्शे में एक स्वतंत्रत सार्वभौमिक गणतंत्र बनकर उभरा. ठीक 6 मिनट बाद भारत के पहले राष्ट्रपति ने शपथ ली और फिर पूरे देश में कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत का संविधान लागू हुआ. गणतांत्रिक भारत की यह पहली सबसे बड़ी उपलब्धि थी. किसी भी महान देश को इतने कम समय में इतना बेहतरीन संविधान नहीं मिला. आज जिन भी देशों में लोकतंत्र है, उन देशों को अपना लोकतांत्रिक संविधान पाने में दशकों लगे हैं, लेकिन भारत ने 2 साल बाद ही यह उपलब्धि हासिल कर ली.

लोकतंत्र ने पहली परीक्षा डिस्टिंक्शन मार्क्स के साथ उत्तीर्ण की

हमारी दूसरी महान गणतांत्रिक उपलब्धि साल 1952 में सफलतापूर्वक सम्पन्न पहले लोकसभा चुनाव हैं. इन चुनावों पर पूरी दुनिया की नजरें टिकी थीं. किसी को नहीं लग रहा था कि 17,32,12,343 मतदाताओं को आसानी से मतदान केंद्र तक लाया जा सकेगा. सारी दुनिया को आशंका थी और सबकी नजरें हम पर टिकी थीं. 25 अक्टूबर 1951 से लेकर 21 फरवरी 1952 तक करीब 4 महीने तक हुई चुनावी कवायद में अंतत: 10 करोड़ 59 लाख मतदाता मतदान केंद्र तक पहुंचे, अपना वोट डाला और साथ ही दुनिया को भी आश्चर्यचकित कर दिया. इस तरह न केवल दुनिया को सबसे बड़ा लोकतंत्र मिला, बल्कि इस लोकतंत्र ने अपनी पहली परीक्षा डिस्टिंक्शन मार्क्स के साथ उत्तीर्ण की. दुनिया हैरानी से देखती रह गई कि कैसे लगभग 85 फीसदी निरक्षर मतदाताओं ने शांतिपूर्वक और संयम बरतते हुए अपने मत का इस्तेमाल किया!

आत्मसमर्पण के बाद भी पाकी सैनिकों को नहीं बनाया बंधक

आजादी के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ 3 युद्ध किए, तीनों में हमारी सेना ने शानदार पराक्रम दिखाया. हम विजयी रहे और चाहते तो पाकिस्तान का बड़ा हिस्सा अपने में शामिल कर लेते. लेकिन हमने कभी लोकतंत्र के विपरीत कोई आचरण करने की कोशिश तक नहीं की. शायद द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हम पहले ऐसे देश थे, जिसने दुश्मन देश का बड़ा हिस्सा जीतकर उसे वापस कर दिया और 1971 में तो करीब 1 लाख पाकिस्तानी फौज को आत्मसमर्पण कराने के बाद भी हमने उन सैनिकों को बंधक नहीं बनाया, उल्टे हमारे सैनिकों ने समर्पण करने वाले इन पाकिस्तानी सैनिकों को सोने के लिए अपनी चारपाइयां दीं, अच्छा व गर्म खाना दिया और खुद कम खाकर जमीन पर सोए. हमारे लोकतांत्रिक संस्कार और सरोकारों ने अपनी एक महान विरासत खड़ी की है. इस तरह अगर 73वें गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर हम अपने अब तक के गणतांत्रिक सफर का विहंगावलोकन करें तो हमारे पीछे शानदार उपलब्धियों की जो विरासत है, उसे लगातार समृद्ध करना ही हर आने वाले गणतंत्र दिवस का हमारा संकल्प होना चाहिए.

वैचारिक संकट पर भी पाई विजय

भारत के सफलतापूर्वक सम्पन्न पहले आम चुनाव वास्तव में गणतांत्रिक भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि हैं. इसके बाद हमने एक से बढ़कर एक उपलब्धियां हासिल कीं. लेकिन जिन कुछ उपलब्धियों ने भारत के लोकतांत्रिक स्वरूप को गढ़ा और जिनके चलते भारत में हर गुजरते दिन के साथ लोकतंत्र मजबूत हुआ, उनमें हमारी कुछ नीतिगत सफलताएं भी थीं. हमारी आजादी के बाद का वैश्विक परिदृश्य भयानक शीतयुद्ध के दौर से गुजर रहा था. एक तरफ समाजवादी धड़ा था, जिसका नेतृत्व तत्कालीन सोवियत संघ कर रहा था, तो दूसरी तरफ पूंजीवादी धड़ा था, जिसका नेतृत्व अमेरिका और ब्रिटेन मिलकर कर रहे थे. भारत के सामने सबसे बड़ा वैचारिक संकट यह था कि हम पूंजीवादी धड़े का हिस्सा बनना नहीं चाहते थे, क्योंकि हमारी बहुसंख्यक जनता बहुत गरीब थी और पूंजीवाद का विचार शोषण की जमीन पर टिका था. ऐसे में अगर हम उस धड़े का हिस्सा बनते तो यह हमारी बहुसंख्यक जनता का अपमान होता. लेकिन हम समाजवादी या साम्यवादी धड़े का हिस्सा भी नहीं हो सकते थे, क्योंकि हम खूनी क्रांति के कभी भी पक्षधर नहीं रहे.

तटस्थ रहकर प्रशस्त किया मार्ग

वास्तव में एक स्वतंत्र और सार्वभौम भारतीय गणतंत्र के लिए यह वैचारिक परीक्षा की घड़ी थी कि हम जाएं तो किस पाले में जाएं! मगर हमने तभी एक नया और महान रास्ता निकाला, यह था गुटनिरपेक्ष का रास्ता, यानी हम दोनों ही गुटों से तटस्थ थे और हमने अपने जैसे तमाम तटस्थ देशों के लिए एक तीसरा रास्ता प्रशस्त किया. वास्तव में भारतीय गणतंत्र की यह एक और चमकदार उपलब्धि थी, जिसके दायरे में सिर्फ हमारा अपना भूगोल भर नहीं था, बल्कि हमारी इस लोकतांत्रिक आस्था की रोशनी पूरी दुनिया में बिखर रही थी. एक ऐसा वक्त आया जब गुटनिरपेक्ष आंदोलन में 70 से ज्यादा देश शामिल थे और यह घोषित समाजवादी और पूंजीवादी दोनों ही धड़ों से ज्यादा बड़ा और मजबूत था. हालांकि हमने इस संख्या और भौगोलिक विस्तार का भी कभी अलोकतांत्रिक फायदा नहीं उठाया और न ही इसकी ताकत को निजी ताकत बनाने की कोशिश की.

▲ लोकमित्र

आखिर कौन ले गया हिटलर का ख़ज़ाना

- 30 हजार कैरेट के हीरे
- 9 टन गोल्ड
- 35 बड़े संदूक भरे जवाहरात
- 600 बोरे नकद

दुनिया के सबसे बड़े तानाशाह का खिताब पाने वाले हिटलर के बारे में बहुत सी बातें आज भी किंवदंती की तरह हैं. हिटलर की मौत के बारे में तो हम सभी जानते हैं, लेकिन माना जाता है कि उसके पास एक बड़ा खजाना था. आखिर वह खजाना कहां है? हिटलर उसका राज किसको देकर गया था? दरअसल द्वितीय विश्व-युद्ध में अपनी सेनाओं की पराजय होती देखकर हिटलर ने आत्महत्या कर ली थी. उसके बाद उसके खजाने का क्या हुआ, आज भी एक रहस्य ही बना हुआ है. हिटलर हीरों का बहुत शौकीन था. कहते हैं उसके खजाने में 30 हजार कैरेट के हीरे थे. इन हीरों को 1944 में जर्मन फौजियों ने अंग्रेजों के बैंकों को लूटकर प्राप्त किया था. जब हिटलर के सामने हीरों का ढेर पेश किया गया तो वह बहुत खुश हुआ और उसने अपने फौजियों को कई इनाम भी दिए. हिटलर के खजाने में हीरों के अलावा कई तरह के रत्न, सोने की छड़ें, बैंक नोट व नकली नोट बनाने का सामान भी था. सोने की कुल 750 छड़ें थीं, जिनका वजन था 9 टन. साथ ही थे हीरे-जवाहारातों से भरे 35 बड़े संदूक और नोटों से भरे 600 बोरे.

बवेरिया से बिटनबर्ड किया था ट्रांसफर

1945 में द्वितीय विश्व-युद्ध का अंतिम दौर चल रहा था. बर्लिन शहर पर भीषण बमबारी हो रही थी. सारा शहर जल रहा था. हिटलर ने आत्मसमर्पण न करने का फैसला किया. बवेरिया के किले में हिटलर का पूरा खजाना रखा गया था. उसकी रक्षा के लिए भारी सेना तैनात थी. पर फिर भी हिटलर अपने खजाने की सुरक्षा को लेकर आशंकित था. बवेरिया का किला उसे सुरक्षित नहीं लग रहा था, अतः उसने सैनिक अधिकारियों को खजाना बवेरिया से बिटनबर्ड शहर पहुंचाने का आदेश दिया. जर्मनी के कोने-कोने से जर्मन सेनापति योद्धा बवेरिया के किले से सोना-जवाहरात, हीरे व धन आदि इकट्ठा करके सारे खजाने को जलपोतों में लदवाकर सुरक्षित रूप से बिटनबर्ड शहर में पहुंचाने लगे. खजाना वहां छिपा दिया गया.

कर्नल लर्व हड़पना चाहते थे सारी दौलत

उधर मित्र देशों की सेनाएं लगातार आगे बढ़ रही थीं. खजानों को अलग-अलग जगहों पर छिपाया गया. अंत में उस खजाने को इंसीडियन नाम के गांव में एक फौजी कप्तान मेटलर के घर में रखा गया. शायद यह सोचकर कि यहां किसी का ध्यान नहीं जाएगा. जिस समय खजाना छिपाया जा रहा था, मेटलर का रिश्तेदार कर्नल लर्व भी वहां मौजूद था. उसने खजाने को हड़पने की योजना बनाई. कर्नल लर्व ने जर्मनी के सेनापति को सुझाव दिया कि खजाने को जंगल में गाड़ दिया जाए, वही सबसे सुरक्षित जगह होगी. उसके इस सुझाव को मान लिया गया. सादी वर्दी पहने 15 सैनिक अफसरों की देखरेख में खजाने को गधों पर लादकर जंगल में ले जाकर गाड़ दिया गया. कर्नल लर्व को यह सब मालूम था. किसी कारण से जब वह खुद यह खजाना पाने में असमर्थ रहा तो उसने अमेरिकी सैन्य अधिकारियों को जाकर यह बात बता दी कि जर्मन सेना ने खजाने को जंगल में गाड़ कर रखा है. अमेरिकी सेना ने उसी समय अपने विशेष दस्ते बुलाकर कर्नल लर्व द्वारा बताए गए स्थान की खुदाई करवाई. काफी मशक्कत के बाद आखिर उन्हें वह खजाना मिल ही गया. आनन-फानन में खजाना जीपों में लादा गया. खजाना इतना ज्यादा था कि जीपों में पूरी तरह समा नहीं पाया. जीपें आगे बढ़ रही थीं, पीछे किसी ने ध्यान नहीं दिया, सोना लगातार नीचे गिर रहा था. कर्नल लर्व पीछे-पीछे अपने साथियों के साथ अमेरिकी सैनिकों से नजरें बचाता हुआ सारा गिरा हुआ खजाना बटोरता गया.

गोल्ड का जखीरा देख दंग रह गई थी अमेरिकी सेना

अमेरिकी सेना जब अपने गंतव्य पर पहुंची तो हैरान रह गई. देखने में ही ऐसा लग रहा था कि काफी सामान कम है. इसके बाद जब अमेरिकी सेना ने सामान की सूची बनाई तो वे दंग रह गए. कुल 1 हजार कैरेट हीरे व एक टन सोने की सलाखें ही जीपों में शेष बची थीं. बाकी 29 हजार कैरेट हीरे और 8 टन सोने की सलाखों के बारे में कुछ भी पता नहीं चला. यह सारा खजाना कर्नल लर्व अपने साथियों के साथ ले गया था या फिर कोई और, इसके बारे में भी केवल अनुमान ही लगाए जा सकते हैं, क्योंकि इस घटना के बाद कर्नल लर्व और उसके साथियों का भी कोई पता नहीं चला. वह खजाना कहां गया, कोई भी नहीं जानता था. इतना विशाल और बहुमूल्य खजाना आज भी रहस्य की परतों तले छिपा हुआ है.

▲ प्रभाकांत

स्टार्टअप की दुनिया के शहंशाह हैं देश के नौजवान

आपदा को अवसर में बदलने का रखते हैं दम

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम को संबोधित करते हुए 17 जनवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारतीय युवा एंटरप्रेन्योरशिप के शिखर पर हैं. इसका अंदाजा स्टार्टअप्स की संख्या देखकर भी लगाया जा सकता है. सच बात तो यह है कि स्टार्टअप की दुनिया में भारतीय नौजवान वाकई शहंशाह हैं. इसमें कोई दो राय नहीं है कि अभी भी हम स्टार्टअप की संख्या के मामले में दुनिया के तीसरे नंबर के देश हैं, लेकिन यह वाकई आश्चर्यजनक उपलब्धि है कि हमारे यहां स्टार्टअप की दुनिया अभी महज 8-10 साल पहले शुरू हुई है. साल 2014 में महज कुछ सौ स्टार्टअप थे और आज भारत में 60 हजार से ज्यादा स्टार्टअप हैं. अमेरिका में 80 हजार से ज्यादा स्टार्टअप हैं, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अमेरिका में स्टार्टअप की संस्कृति 10-20 साल नहीं, बल्कि 50-60 साल पुरानी है. भारतीय युवाओं के खाते में स्टार्टअप को लेकर एक बड़ी उपलब्धि यह भी है कि पिछले 2 साल से, जबकि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था अस्तव्यस्त हुई पड़ी है और कहीं पर भी इन 2 साल में 2000 भी नये स्टार्टअप नहीं लगे हैं, इसी दौरान भारतीय युवाओं ने कमाल कर दिया है.

पूरी दुनिया को दे रहे अर्थव्यवस्था की नई समझ

भारत में पिछले दो वर्षों के भीतर न केवल 20 हजार से ज्यादा नये स्टार्टअप शुरू हुए हैं, बल्कि इन स्टार्टअप में 40 से ज्यादा यूनीकॉर्न्स हैं. यूनीकॉर्न्स वे स्टार्टअप होते हैं, जिनमें 1 अरब डॉलर यानी करीब 7 हजार 200 करोड़ रुपये से ज्यादा की पूंजी का निवेश होता है. भारत में इस समय ऐसे 80 यूनीकॉर्न्स हैं. अगर कहें कि आज की तारीख में भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बहुत मजबूत पहलू बनकर स्टार्टअप उभरे हैं तो शायद ही इस बात का दुनिया का कोई अर्थशास्त्री खंडन करे. साल 2020 और 2021 दुनिया की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत मुश्किल भरे साल साबित हुए हैं. लेकिन जैसा कि भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से आह्वान किया था कि एकजुट होकर वे इस आपदा को अवसर में बदलें तो कहना चाहिए कि भारतीय युवाओं ने तो कम से कम यह कर दिखाया है. इन्हीं 2 साल में भारत में 20 हजार से ज्यादा नये स्टार्टअप शुरू हुए हैं और इनमें 40 यूनीकॉर्न्स भी बने हैं. स्टार्टअप उन कंपनियों को कहा जाता है, जो किसी नये या यूनीक बिजनेस आइडिया को लेकर सामने आती हैं या फिर ये अपने कस्टमर को यूटिलिटी सर्विस उपलब्ध कराती हैं.

नौकरी पाने से ज़्यादा देने की ख़्वाहिश

कोई भी स्टार्टअप एक या एक से ज्यादा उद्यमियों द्वारा शुरू किया जाता है और इसका उद्देश्य अपने ग्राहकों को उत्पादन के स्तर पर या सर्विस के स्तर पर बढ़िया से बढ़िया सेवा उपलब्ध कराना होता है. हालांकि आज भी भारत में नौकरी चाहने वाले युवाओं की संख्या बहुत ज्यादा है, लेकिन अगर देखा जाए तो पिछले कुछ वर्षों में बड़ी संख्या में ऐसे नौजवान उभरकर सामने आए हैं, जिनके दिलोदिमाग में नौकरी पाने से कहीं ज्यादा नौकरी देने की ख्वाहिश है. आज की तारीख में करीब 1 लाख नौजवान कम से कम 10 से 12 लाख नौजवानों को अपने स्टार्टअप्स के जरिये रोजगार दे रहे हैं. यह देश की किसी भी एक राज्य सरकार के कर्मचारियों से कई गुना ज्यादा है. भारत सिर्फ उम्र से ही नौजवान देश नहीं है. निश्चित रूप से भारतीय नौजवानों की जो कई गतिविधियां भारत को एक युवा और जोखिम लेने की हिम्मत रखने वाला देश बनाती हैं, उनमें बड़े पैमाने पर यह स्टार्टअप कल्चर भी है.

दो वर्ष में 40 से ज्यादा यूनीकॉर्न्स

आज भारत के युवा पूरी दुनिया को अर्थव्यवस्था की एक नई समझ दे रहे हैं कि अगर आपके पास नया विचार है तो पूंजी कोई समस्या नहीं है. भारतीय युवाओं ने हमेशा दुनिया के दूसरे देशों के युवाओं के मुकाबले अपनी सुर्ख इमेज गढ़ी है. भारतीय युवा दुनिया के अकेले ऐसे युवा हैं, जो कम उम्र में सबसे ज्यादा कमाते हैं. आज भारत की अर्थव्यवस्था में 46 अरब डॉलर से ज्यादा का तिमाही योगदान युवाओं का है. फिर चाहे वो विदेश जाकर कमाई करने वाले युवा हों जिनके द्वारा भेजी गई विदेशी मुद्रा से हमारा विदेशी मुद्रा भंडार बनता है, या फिर अर्थव्यवस्था के तमाम इनोवेटिव तरीकों को ईजाद करके भारत में रहते हुए भी विश्व अर्थव्यवस्था का ताकतवर हिस्सा बनने वाले युवा हों.

युवा पीढ़ी निभा रही मुख्य भूमिका

भारत के युवा आज स्टार्टअप किंग हैं. लेकिन यह सब कुछ रातोंरात नहीं हो गया, इसकी एक लंबी भूमिका है. आज भारत में 50 लाख से ज्यादा सॉफ्टवेयर डेवलपर्स काम कर रहे हैं, जो सिर्फ भारत के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए कर रहे हैं.

▲ निनाद गौतम

बचपन में नहीं मिला शैतानियों का वक़्त

विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक विजेता लक्ष्य सेन ने पुरुष एकल फाइनल में विश्व चैंपियन लो कीन यू को पराजित करके इंडिया ओपन खिताब अपने नाम किया. लक्ष्य के करिअर का यह सबसे बड़ा और पहला सुपर-500 खिताब है. इससे पहले अल्मोड़ा के इस 20 वर्षीय लड़के ने दो सुपर-100 खिताब जीते थे- डच ओपन व सार लोर लक्स ओपन.

सुपर-500 खिताब विजेता लक्ष्य

पिछले महीने स्पेन में आयोजित विश्व चैंपियनशिप में लक्ष्य सेन ने कांस्य पदक जीता था और यह कारनामा उनसे कम आयु में किसी अन्य भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी ने नहीं किया है. लक्ष्य की मां निर्मला सेन बेटे की कामयाबी से काफी खुश हैं. उनसे जब लक्ष्य के बचपन और उसकी शैतानियों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि लक्ष्य काफी सीधे थे, कभी परेशान नहीं किया. हालांकि उन्होंने कहा कि पढ़ाई और प्रैक्टिस के बीच शैतानी के लिए उनको वक्त ही नहीं मिला. वर्तमान में 61747 प्वाइंट के साथ उनकी विश्व बैडमिंटन रैंक 17 है.

अब ऑल इंग्लैंड टूर्नामेंट पर फोकस

बैडमिंटन के भीष्म पितामह उनके दादा

लक्ष्य के दादा सीएल सेन को अल्मोड़ा में बैडमिंटन का भीष्म पितामह कहा जाता है. उन्होंने कुछ दशक पहले अल्मोड़ा में बैडमिंटन की शुरुआत की और आज एक से बढ़कर एक खिलाड़ी अल्मोड़ा से निकलकर देश और दुनिया के पटल पर छा रहे हैं. लक्ष्य का अगला टारगेट ऑल इंग्लैंड टूर्नामेंट है जो मार्च में होना है. लक्ष्य के पिता डीके सेन बैडमिंटन के जाने-माने कोच हैं और वर्तमान में प्रकाश पादुकोण अकादमी से जुड़े हैं. पिता की देखरेख में लक्ष्य ने होश संभालते ही बैडमिंटन खेलना शुरू कर दिया और वह 4 साल की उम्र से स्टेडियम जाने लगे. 6-7 साल की उम्र में ही लक्ष्य का खेल और उसकी प्रतिभा हर किसी को हैरान करती थी. 2018 में लक्ष्य ने जूनियर एशियन बैडमिंटन चैंपियनशिप अपने नाम की थी. अब उन्होंने अपना पहला वर्ल्ड टाइटल जीता है. इससे पहले पिछले महीने स्पेन में वर्ल्ड चैंपियनशिप में भी कांस्य पदक जीता था. लक्ष्य ने पिता और कोच डीके सेन की अगुआई में लगातार दूसरा पदक जीता है.

सात्विक-चिराग की जोड़ी ने बनाया रिकार्ड

दूसरी ओर सात्विक व चिराग अपने अधिक अनुभवी प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध 1-3 के करिअर रिकॉर्ड के साथ कोर्ट में उतरे थे, लेकिन उन्होंने स्टील जैसी हिम्मत का प्रदर्शन किया और 5 गेम पॉइंट्स बचाते हुए विश्व की नंबर-2 रैंकिंग वाली इंडोनेशिया की जोड़ी पर जीत हासिल की. मैच के बाद चिराग ने कहा, "पिछले साल हमें न कोई खिताब मिला था और न ही हम किसी फाइनल में पहुंचे थे, लेकिन अपने देश में लौटकर साल की शुरुआत खिताब से करके अच्छा महसूस हो रहा है. अपनी आदर्श जोड़ी के विरुद्ध जीतना विशेष है. अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर इस अंदाज से जीतना हमें हमेशा याद रहेगा. योजना के हिसाब से यह हमारा सबसे अच्छा मैच था... हमने जब राष्ट्रकुल खेलों में या थाईलैंड ओपन में जीत हासिल की थी तो हमने अटैक किया था, जिसमें हम अच्छे हैं, लेकिन आज हम अपने रक्षात्मक खेल से जीते."

▲ साभार

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

06

जयपुर >> शुक्रवार, 28 जनवरी, 2022

आज़ाद भारत

मिन्नी मिश्रा, पटना

'जन गण मन ....' राष्ट्रीय गान के साथ तिरंगा नभ में लहरा उठा । तिरंगे में बंधे रंग-बिरंगे फूल धरा को चूमने लगे ।

भारत माता और वन्दे मातरम् की गूँज के साथ परिसर का वातावरण देश-भक्ति में सुवासित हो उठा।

परिसर के सभी गेट खुले रहें। हाकिम ने अर्दली को यह निर्देश दिया ।

जी हजूर । अर्दली ने लंबा सलाम ठोक कर हाकिम को उत्तर दिया ।

सुनो , ध्यान रखना...भेद-भाव किए बिना सभी आगंतुकों को एक समान जलेबी मिलनी चाहिए । हाकिम ने आदेशात्मक स्वर में कहा ।

जैसा आदेश हजूर का।

इतना कहकर, अर्दली आफिस के चतुर्थ वर्गीय कर्मचारियों के साथ तत्परता से जलेबी बांटने में व्यस्त हो गया ।

परिसर के प्रांगन में बच्चे , अपने नन्हें हाथों में छोटे झंडे लेकर इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे। देश भक्ति की धुन पर झाँकी का प्रदर्शन जारी था। रंगारंग कार्यक्रम के चकाचौंध से बहत्तर साल का आजाद भारत जवान दिख रहा था । सभी आगंतुक कार्यक्रम को देखने में आनंदमग्न थे।

कार्यक्रम स्थल से दूर, परिसर के एक कोने में खड़े दो कर्मचारी, गणमान्य के स्वागत में आए नाश्ते के कीमती पैकेटों में से कुछ पैकेटों को अन्य की नजरों से बचाते हुए अपनी झोली में जल्दी-जल्दी रख रहे थे।

तभी ...दर्शक दीर्घा में बैठी .. मेरी नजर

उन तक पहुँच गयी। मैं विचारने लगी कि, लालच और वासना की गुलामी में जकड़ी मानसिकता, क्या हमारे आज़ाद भारत को आज़ाद रख पाने में सक्षम है ? !

परिसर में 'भारत माता की जय' का उद्घोष जारी था ।

गणतन्त्र दिवस

26 जनवरी गणतन्त्र दिवस
हमारा एक बड़ा त्यौहार है
आज के ही दिन मिला हमें
गणतन्त्र का उपहार है
अपना राज अपना संविधान
अपना यह देश हमारा है
अपना देश हमें अपनी
जान से भी प्यारा है
आज के दिन हमारा संविधान
हमारे द्वारा हमारे लिये
रचित हुआ और हमें मिला
एक प्यारा ग्रन्थ है
यही तो संविधान की
प्रस्तावना का मूल अंश है
हमने भी तो इसी अंश को
अपने जीवन में अपनाया है
याद रखा संविधान के दिये
मौलिक अधिकार को
अपना कर्तव्य भुलाया है
बस सभी को अधिकार चाहिये
कर्तव्यों की क्या बात करें
लेना सभी को है देश समाज से
देने का कोई नाम न लें
आज तो याद करो मित्रों
अधिकार के साथ कर्तव्य को
अपना अधिकार वहीं तक है
जहाँ प्रतिवेशी का है प्रारम्भ
अपने अधिकार की रक्षा संग
कर्तव्य निभाना हो आरम्भ
आज के दिन हम लें शपथ
मौलिक अधिकार संग अपने
मौलिक कर्तव्य भी निभायेंगे
लेने संग देने का हुनर हम
समाज को दे जायेंगे
तभी हमारा यह गणतन्त्र
उन्नत होता जायेगा
विश्व में हम गौरवान्वित होंगे
तिरंगा शान से लहरायेगा।

निर्मला कर्ण, राँची, झारखण्ड

कविता

आज़ादी के रंग...

गर्व है, कि मैं हिंदुस्तानी हूँ,
उस रंग में रंगी हूँ ..जो है केसरिया,
जो बताता है अपने रंग से
गाथाएँ उन वीरों की
जिन्होंने मस्तक वार दिए,
वतन परस्ती में हार दिए,
फिर भी न रुके उनके कदम
जो बढ़ते चले आज़ादी के लिए।।
मैं उस रंग में रंगी हूँ,
जो है केसरिया...
जो बताता है उन माताओं की गाथाएं,
जिन्होंने न्यौछावर किये अपने लाल
फिर भी न किया कोई मलाल
क्योंकि आज़ादी चाहिए उस माँ को,
जो जकड़ी थी बेड़ियों में,
बंधे थे हाथ लाचार,बेबस...
इसलिए किया था प्रेरित
लोरियों संग सुनाई थी गाथायें
उन वीरों, जिससे शहीद हो,कुर्बान हो
आज़ादी के लिए अपनी माँ की।
मैं रंग में रंगी हूँ जो है, केसरिया
जिसने बलिदान किया अपने को,
तभी मिली आज़ादी, और...
फिर मैं हुआ केसरिया से हरा।
जो रंग है खुशी का
उल्लास का, उमंग का
आज़ादी का तरंग का,
लहलहाती फसल का,
आज़ादी की नसल का।
उस फर्क़ का, बेफ़िक्री का
जिसे पाने की जुनून में
कितने हुए शहीद
और हुआ कितनों का कत्ल
तभी मिली आज़ादी
और मैं हुआ रंग सफेद।।
सफेद....
जो है शान्ति का ,
पावन का, मन का
मनभावन का
आनंद का...
आराधना का
लेकिन नही भूला उस रंग को,
जिसने किया न्यौछावर अपने को,
खोकर दी आज़ादी,
और अंत मे रंग है नीला....
उस चक्र का, उन्मुक्तता का
पंछी का, आकाश का
सोच का
विस्तार का, बलिदान का
जीने की जोम का
होम का...अग्नि का,
और तीलियों से सजाई है माला
कंठ में अपने
तभी मिली आज़ादी।। तभी मिली आज़ादी....

स्मिता शुक्ला
आर्टिस्ट, कवियत्री,
एक्टिविस्ट
जयपुर

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर का 18वां दीक्षान्त समारोह आयोजित

नई शिक्षा नीति लागू करने में अन्य राज्यों के लिए मिसाल बनें हमारे विश्वविद्यालयः कलराज मिश्र

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि नई शिक्षा नीति को लागू करने और इसके अतंर्गत पाठ्यक्रम निर्धारण में प्रदेश के विश्वविद्यालय दूसरे राज्यों के लिए मिसाल पेश करें। उन्होंने कहा कि राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से समय-समय पर संवाद कर नई शिक्षा नीति को आगामी सत्र से लागू करने के चरणबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं। राज्यपाल मिश्र गुरुवार को यहां राजभवन से जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के 18 वें दीक्षान्त समारोह में ऑनलाइन सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने परम्परागत शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास के लिए विश्वविद्यालयों में प्रभावी रूप से कार्य किए जाने का आह्वान किया। उन्होंने शिक्षकों से पाठ्यक्रमों को अद्यतन करने का भी आह्वान करते हुए कहा कि इनमें भारतीय ज्ञान व संस्कृति का समावेश भी होना चाहिए। कुलाधिपति ने कहा कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवा अधिकाधिक आत्मनिर्भर बन सकें इसके लिए उनमें आरम्भ से ही स्वावलम्बन की भावना विकसित करना जरूरी है।

मिश्र ने विश्वविद्यालय की स्थापना के आगामी जुलाई में साठ वर्ष पूरे होने की शुभकामना देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पदों पर पहुंच कर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए मोगड़ा कलां गांव को आदर्श गांव बनाने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सालावास गांव को भी विश्वविद्यालय द्वारा आदर्श गांव बनाने की पहल करने की सराहना की। उन्होंने कहा कि जोधपुर में संचालित आई आईटी, एम्स व मरु क्षेत्र में संचालित अन्य अनुसंधान केन्द्रों का सहयोग लेकर इस क्षेत्र को उपजाऊ, उर्वरायुक्त एवं हरा-भरा बनाने के लिए कार्य किया जाना चाहिए। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय परिसर में बनने वाले संविधान पार्क का शिलान्यास और विश्वविद्यालय की पुस्तिका 'परिस्पंद' का ऑनलाइन लोकार्पण भी किया। श्री मिश्र ने सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर एवं देश में हरित क्रांति के जनक वैज्ञानिक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को मानद उपाधि के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने प्रख्यात पार्श्वगायिका लता मंगेशकर के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना भी की।

उच्च शिक्षा का केन्द्र बना जोधपुर-मुख्यमंत्री: जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के 18वें दीक्षान्त समारोह को वर्चुअल रूप से सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि हमें इस बात का गर्व है कि पूरे देश में जोधपुर एकमात्र ऐसा बड़ा शहर है, जहां राष्ट्रीय स्तर के कई उच्च शिक्षण संस्थान एक साथ हैं। जोधपुर आज उच्च शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र बन गया है, जहां आई आईटी, एम्स, निफ्ट, एफडीडीआ, नेशनल लॉ यूनिर्वसिटी एवं पुलिस विश्वविद्यालय स्थापित हैं। शीघ्र ही, यहां डिजिटल यूनिर्वसटी खुलेगी जिसके लिए राज्य सरकार ने 400 करोड़ रुपए स्वीकृत किए हैं एवं जमीन आवंटन की प्रक्रिया चल रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक समय में राजस्थान को पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता था, लेकिन आज वह स्थिति नहीं है।

सुन्दर भारत

मिली आज़ादी
खुली हवा में सांस लेने की
बे-रोक-टोक आने-जाने की
अपनी बात को रखने की
बड़ी कुर्बानियों से मिली है
भूल जाए ऐसा कोई नहीं
भारतीय होने का गर्व है
भारत मना रहा गणतंत्र है
हमारे देश में लोकतंत्र है
बनी सरकारी योजनाएं
आखिरी तपके तक पहुंचे
संभव जब ईमानदार तंत्र है
यही विकास का मूल मंत्र है
आइए मिलकर
मनाते हैं गणतंत्र दिवस
प्राणों से भी प्यारा तिरंगा
मिलकर फहराते हैं
उन्माद के विष बेल को
उखाड़ फेकते हैं
अमन भाईचारा को फैलाने
नफ़रत की दिवार गिराते हैं
जो हिंसा के सौदागर

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी उत्तर प्रदेश

उनको सबक सिखाते हैं
अमन चैन से रहकर हम
ईद दीवाली मनाते हैं
आओ मिलकर
सुन्दर भारत बनाते हैं।।

प्रेम की धारा

चलो चलें हम देश देखने,
जहाँ प्रेम की धारा है ।
मंदिर मस्ज़िद गिरिजाघर,
गुरु नानक का गुरुद्वारा है ।।
हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई,
आपस में हैं भाई ।
जिनके सांसों में बसती हैं,,
ममता की तरुणाई ।।
दया धर्म करुणा की वेदी,
फूलों से भी न्यारा है ।
चलो चलें हम देश देखने,
जहाँ प्रेम की धारा है ।।
हिन्दी है जिस देश की बिंदी,
बोली है जिसका सिंगार।
सभी लोक भाषाओं को हम,
सब मिलकर करते हैं प्यार ।।
जिसने आँखें उठा के देखीं,
उनको यह ललकारा है ।
चलो चलें हम देश देखने ,
जहाँ प्रेम की धारा है ।।
राम कृष्ण गाँधी को जिसने ,
मन से गले लगाया ।
गीता औ कुरान की आयत ,
उसे समझ में आया ।।
सारे जहां से अच्छा सच्चा ,
हिन्दोस्तां हमारा है ।
चलो चलें हम देश देखने,
जहाँ प्रेम की धारा है ।।

नरेन्द्र प्रसाद सिंह
नवादा (बिहार)

बेटियों को भरने दो उड़ान

बेटियों को भरने दो उड़ान
उड़ने दो बीच खुले आसमान
रोशनी तभी बिखेरेंगी अपनी
चमकेगा फिर यह जहान
बेटे और बेटी में मत फ़र्क करो
खूब पढ़ाओ इनको खूब लिखाओ
बहती धारा हैं ज़माने में बेटियां
इनके रास्ते में कांटे मत बिछाओ
बेटी बरगद के पेड़ की तरह है
जो सूखता नहीं कभी जीवन पर्यंत
प्यार और त्याग की देवी हैं
सहनशीलता है जिसमें अनंत
बेटियों से घर में रहती है रौनक
जीवन में आ जाती है बहार
महक उठती है जीवन की फुलवारी
रौशन हो जाते हैं घर बार
बेटियां रत्नों का वह अनमोल खजाना है
जो हर किसी को नहीं मिलता है
यह वह फूल है पारिजात का
जो बहुत किस्मत वालों को मिलता है
पंख देंगे अपनी बेटियों की उड़ान को
आओ प्रण लें बेटियों का रखेंगे ख़्याल
बहु बेटियों को यदि मानेंगे एक समान
तभी तो होगा हमारा भारत खुशहाल।।

रवींद्र कुमार शर्मा
बिलासपुर हि प्र

गणतंत्र दिवस

आजादी की पावन गंगा,
अविरल बहती जाएगी।
अमृत महोत्सव मना रहे हैं,
अटल अजय कह लाएगी।
आजादी मिलना ना काफ़ी,
गणतंत्र अमर बनाया है।
संविधान निर्माता अंबेडकर जी ने,
कर्तव्यों व अधिकारों से सजाया है।
26 नवंबर 1949 को,
पारित यह संविधान किया।
गुणी महान विभूतियों ने मिलकर,
प्रारूप इसका तैयार किया।
धर्म कर्म नीति उद्देश्यों,
अधिकारों का ध्यान किया।
भारत की जनता को इसमें,
सर्वोपरि स्थान दिया।
विश्व पटल पर भारत की अखंडता,
अक्षुण्णता का परचम भी लहराया।
एकता में अनेकता, वसुधैव कुटुंबकम्,
का संदेश देकर मान बढ़ाया।
26 जनवरी 1950 से,
लागू कर दिया संविधान।
संपूर्ण विश्व को मिला एक,
लोकतंत्रात्मक गणराज्य का विधान।
इतने सालों से आज तक,
संविधान को बनाए रक्खा है।
इस गणतंत्र ने भारत को,
संभाले रक्खा है।।

सलोनी 'क्षितिज' रस्तोगी
जयपुर, राजस्थान

आज़ादी एक सौगात

मिली देश को आज़ादी
क़ीमती एक सौगात है।
महफ़ूज़ रहे तोहफ़ा नायाब
चुनौती भी तो साथ है।
छू न पाये दुश्मन कोई
माँ का पावन दामन।
कर दो सर कलम उसका
जो हो पापी रावण।
ना छोड़ो उस पाजी को,
दुश्मन जो आये हाथ है।
इसकी ख़ातिर रणबांकुरों
ने दे दी अपनी जान।
न्यौछावर कर सबकुछ उसने
रखी हमारी देश की शान।
कफ़न बाँधकर अपने सर
फिरंगियों से ली टक्कर।
मिटे पर न पीठ दिखाई,
ऐसे थे योद्धा फक्कड़।
ऐसे अमर शहीदों से
चमका हिंद ललाट है।
रहे सलामत सदा आजादी
यही शहीदों के अरमान।
आँच न आये इसके आँचल
मर्दन न हो कहीं मान।
होगी सच्ची श्रद्धांजलि
देशभक्ति जज्बात है।
आजादी के जश्न में
भूल न जाये अपना फ़र्ज।
याद रहे वतन - माटी का
हम पर है हजारों कर्ज़।
खुशियाँ ऐसी हर दर पे
लगे जैसे बारात है।
मिली देश को आज़ादी
कीमती एक सौगात है।

अभय कुमार भारती
भागलपुर(बिहार)

जंपसूट संग जैकेट्स का जलवा

सर्दियों में कई महिलाएं अपनी स्टाइल को लेकर काफी परेशान होती हैं क्योंकि सर्दी की वजह से महिलाएं कपड़ों को सही ढंग से स्टाइल नहीं कर पाती हैं. अगर आप भी इस बात को लेकर परेशान हैं कि सर्दियों में खुद को स्टाइलिश कैसे दिखाया जाए तो अब आप परेशान न हों क्योंकि आप अपने विंटर आउटफिट्स में जैकेट्स को डिफरेंट तरीके से जंपसूट के साथ स्टाइल कर सकती हैं. आपके लिए सर्दियों में जींस, जंपसूट के साथ वुलन जैकेट्स स्टाइल करने का बेस्ट ऑप्शन है. पार्टी में जाना हो या फिर ऑफिस, आप एक नहीं बल्कि अलग-अलग जंपसूट के साथ जैकेट्स को आसानी से कैरी कर सकती हैं.

शॉर्ट जैकेट

अगर आपके पास शॉर्ट जैकेट है तो आप इसे ब्लैक जंपसूट के साथ पहन सकती हैं. ब्लैक जंपसूट एक ऐसा परिधान है जिसे आप डेली वियर से लेकर पार्टी में आसानी से कैरी कर सकती हैं. अधिकांश महिलाओं को सिंपल जंपसूट के साथ मल्टी कलर का लॉन्ग जैकेट पहनना पसंद होता है लेकिन आप इसे अलग तरीके से स्टाइल कर सकती हैं. आप जंपसूट के साथ डिजाइनर शॉर्ट जैकेट पहन सकती हैं. इसके अलावा आप जैकेट को जंपसूट की कोटी की तरह भी कैरी कर सकती हैं.

लेदर

लेदर जैकेट में महिलाएं इतनी सुंदर लगती हैं कि हर किसी का ध्यान उनकी ओर जाता है. वैसे तो महिलाएं लेदर जैकेट को टॉप और जींस के साथ पहनना पसंद करती हैं लेकिन क्या आपको पता है कि आप इसे जंपसूट के साथ भी कैरी कर सकती हैं. जी हां, आजकल जंपसूट के साथ लेदर जैकेट पहनने का काफी ट्रेंड है. ज्यादातर महिलाएं जंपसूट के साथ लेदर की जैकेट पहनने लगी हैं क्योंकि यह जैकेट न सिर्फ स्टाइलिश लुक देगी बल्कि आपको ठंड का एहसास भी नहीं होगा.

डेनिम

डेनिम जैकेट एक ऐसी जैकेट है जिसे आप किसी भी ड्रेस के साथ आसानी से कैरी कर सकती हैं. आप डेनिम जैकेट को न सिर्फ जीन्स के साथ पहन सकती हैं बल्कि जंपसूट के साथ भी कैरी कर सकती हैं. आजकल जंपसूट काफी ट्रेंड में हैं. बाजार में आपको डेनिम जैकेट की कई वैरायटी मिल जाएगी. आप अपनी ड्रेस के हिसाब डेनिम जैकेट खरीद सकती हैं.

ओवरसाइज्ड

जंपसूट को स्टाइल करने का यह भी एक तरीका है कि आप उसे ओवरसाइज्ड जैकेट के साथ कैरी कर सकती हैं. आप लाइट कलर के जंपसूट के साथ पैटर्न ओवरसाइज्ड जैकेट को पहन सकती हैं.

ओवरसाइज्ड जैकेट को पहनते समय इस बात का भी ध्यान दें कि वह आपके साइज का ही हो अन्यथा इसमें आपका लुक बेहद बल्की नजर आएगा.

मज़बूत रिश्तों से ज़िंदगी खुशहाल

वह कौन-सी ऐसी चीज है जो आपके रिश्ते को मजबूत और स्वस्थ बनाती है? उत्तर आपके विचार से कहीं अधिक सरल है, प्रयास और प्यार. रिश्तों को बेहतर बनाने के लिए कुछ सुझाव -

खुद को पहले बेहतर समझें

दूसरों से जुड़ाव बढ़ाने का पहला कदम है सबसे पहले खुद से जुड़ना. समझें कि आपका दिमाग कैसे काम करता है. अपने और दूसरों के बारे में आपके क्या विचार हैं? वास्तव में आप अपने रिश्तों और दोस्ती में क्या देखते हैं? इन सवालों पर चिंतन करने से आप इस बात की गहरी समझ हासिल कर सकते हैं कि आप रिश्तों में प्यार कैसे देते हैं और प्राप्त करते हैं? यह समझ आपको इस बात के प्रति सच्चे होने के लिए प्रोत्साहित करती है कि आप कैसे लोगों के साथ संबंध बनाना पसंद करते हैं. अगर आप विचारों के बारे में स्पष्ट हैं तो रिश्ते मजबूत होंगे.

पक्के इरादे बनाएं

आपको समझना चाहिए कि आपके जीवन में हर चीज की तरह रिश्ते भी आपके अपने मन की इच्छा और शक्ति से आते हैं. यदि आप अच्छी मित्रता को आकर्षित करने में सफल नहीं रहे हैं तो इसे अपनी गलती न समझें. बस याद रखें कि आप ने अपने विचारों को बदलने के लिए पर्याप्त जिम्मेदारी नहीं ली. इसलिए अपनी ऊर्जा को उस ओर फिर से भेजें जो आप अनुभव करना चाहते हैं. क्या आप चाहते हैं कि आपके आस-पास अधिक मजेदार लोग हों या आप से अधिक ज्ञानी लोग जिनसे आप कुछ नया सीख सकें. उन लक्षणों को पहचानें जिन्हें आप अपनी मित्र मंडली में देखना चाहते हैं. एक मजबूत इरादा बनाएं कि आप अपने जीवन में इस प्रकार के कनेक्शन को आकर्षित करेंगे. आपके इरादे ही आपके विचारों को सक्रिय करते हैं. आपके इरादे को जीवन में प्रकट करने के लिए आपके अवचेतन मन को प्रभावित करना शुरू करते हैं.

धैर्य का अभ्यास करें

दोस्ती एक-दूसरे को हमारे सभी दोषों के साथ स्वीकार करने के बारे में है जहां हम एक-दूसरे को विकसित होने में मदद करने की कोशिश कर रहे हैं. ऐसे में हमें हर समय सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण बनाए रखना होगा. इस सकारात्मक रवैये से हम न केवल अपनी कमजोरियों पर काम करेंगे बल्कि दूसरे को भी विकसित होने में मदद करेंगे. जिस धैर्य के साथ आप अपने रिश्तों में व्यवहार करते हैं, वह मजबूत बंधन विकसित करने की कुंजी है. याद रखें स्वीकृति व धैर्य रिश्तों में प्यार लाते हैं.

इको फ्रेंडली बैग्स करें कैरी

ज्यादातर घरों में प्लास्टिक के बैग्स का इस्तेमाल किया जाता है. सस्ते होने के कारण लोग प्लास्टिक बैग्स का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं. हम सभी जानते हैं कि प्लास्टिक से बने बैग वातावरण के साथ-साथ हमारी सेहत को भी नुकसान पहुंचाते हैं. यही वजह है कि इन्हें देश भर में बैन भी किया जा चुका है. इसके बावजूद भी इन बैग्स के इस्तेमाल बड़े पैमाने पर किए जा रहे हैं. ऐसे में हमें जरूरत है कि हम सामान कैरी करने के लिए पॉलीथिन बैग्स की जगह दूसरी तरह के कैरी बैग्स का इस्तेमाल करें.

हेम्प बैग

यह बैग हेम्प से बना होता है. अगर आप लिक्विड पदार्थ ले जाना चाहते हैं तो आप इस बैग में आसानी से कैरी कर सकते हैं. कॉटन की तुलना में यह ज्यादा मजबूत और टिकाऊ होता है. इसके अलावा अगर आप भारी चीजें कैरी करते हैं तो भी यह बैग फैलेगा नहीं क्योंकि इसमें सामान उठाने का सामर्थ्य अधिक है. टिकाऊ और ट्रेंडी बैग बनाने के लिए हेम्प के कपड़े को रेशम या फिर कॉटन की मदद से बनाया जाता है.

कॉटन बैग

कॉटन बैग सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले इको-फ्रेंडली बैग्स में से एक हैं. अन्य बैग की तरह यह हल्के, फैशनेबल और छूने में मुलायम होते हैं. कॉटन इको-फ्रेंडली का योग्य विकल्प हो सकता है. इस बैग को लंबे वक्त तक बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता है. कॉटन बैग न सिर्फ सस्ता होता है बल्कि टिकाऊ भी.

जूट बैग

जूट का बैग भी इको-फ्रेंडली है. अगर आप अधिक सामान कैरी करना चाहती हैं तो जूट बैग बेस्ट ऑप्शन है. यह टियर प्रूफ होता है और कागज या फिर प्लास्टिक की तुलना में अधिक मजबूत. यही वजह है कि अधिक सामान कैरी करने के लिए इसका इस्तेमाल खूब किया जाता है. ये बैग पूरी तरह से कंपोस्टेबल होते हैं. यानी इससे पर्यावरण को किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होगा.

बम्बू बैग

रोजाना इस्तेमाल करने के लिए बम्बू बैग परफेक्ट ऑप्शन है. यह देखने में अन्य बैग की तरह ही काफी स्टाइलिश और फैशनेबल होते है. बम्बू बैग मजबूत होने के साथ-साथ काफी हल्के भी होते हैं. यह पूरी तरह से बायोडिग्रेडेबल होते हैं और इसे वर्षों तक इस्तेमाल किया जा सकता है. अगर यह गंदा हो जाए तो भी इसे साफ करना आसान होता है. इनमें नेचुरल एंटी-फंगल और एंटी-बैक्टीरियल गुण भी होते हैं.

पेपर बैग

पेपर बैग इन दिनों काफी ट्रेंड में है. प्लास्टिक बैग की तुलना में यह उपयोगी और टिकाऊ ऑप्शन है. अन्य इको फ्रेंडली बैग की तरह यह भी बायोडिग्रेडेबल होता है. पेपर बैग इस्तेमाल करने में काफी सुरक्षित है. आमतौर पर पेपर बैग प्लास्टिक की तुलना में अधिक वजन संभाल सकते हैं. बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए पेपर बैग बेस्ट ऑप्शन्स में से एक है.

मनोबल बढ़ाने से हुनरमंद बनेंगे बच्चे

सभी माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा दुनिया का सबसे खुश इंसान रहे. अपने बच्चे को खुश करने के लिए वे हर तरह की तरकीब अपनाते हैं. हालांकि कुछ पैरेंट्स यह नहीं समझ पाते कि आखिर वे किन तरीकों को अपनाकर बच्चों के करीब रह सकें और उन्हें खुश रख सकें. अक्सर माता-पिता को पता ही नहीं होता कि उनके बच्चे उनसे किस तरह की उम्मीद रखते हैं. आपको बता दें कि बच्चों को खिलौने आदि से ज्यादा खुशी आपके बर्ताव और स्नेह से मिलती है. पैरेंट्स अगर बच्चों को कुछ नया करने के लिए प्रेरित करें और भावनात्मक रूप से उनका मनोबल बढ़ाते रहें तो यही उनकी सबसे बड़ी खुशी होती है. ऐसा करने से आपके बच्चे कुछ नया करते और सीखते हैं. साथ ही उनमें आपके प्रति एक अलग फीलिंग जागती है.

उनकी बात सुनें

कई पैरेंट्स बिजी होने की वजह से बच्चों से अधिक बात नहीं कर पाते या अगर बच्चे उन्हें कुछ बताना चाहते हैं तो वे उनकी छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज कर देते हैं .हमें ऐसा नहीं करना चाहिए. ऐसा करने पर उन्हें लगेगा कि आपको उनकी परवाह नहीं है. अगर बच्चों के अंदर ऐसी भावना आ जाएगी तो वे धीरे-धीरे अपनी दिल की बातें कहना बंद कर देंगे और उनका आत्मविश्वास भी कम होगा. ऐसे में वे दुखी और डरे-डरे रहेंगे.

उनकी बातों को दें महत्व

कई बार हम बच्चों की बातों को बचकानी समझकर या तो उन्हें फटकार देते हैं या हंस देते हैं. ऐसा न करें. ऐसा करने से उनके मन में आपके प्रति नकारात्मकता बनती है. बच्चों को लगता है कि उनकी बातों को नहीं सुना जा रहा है और ऐसे में वे आप से मन की बात या समस्या कहना बंद कर देते हैं. ऐसे में बच्चे कई बड़े हादसे के शिकार हो जाते हैं.

अच्छे कामों को हमेशा सराहें

आपके बच्चे ने अगर कुछ अच्छा काम किया है या परीक्षा में बेहतर रिजल्ट लाया है, म्यूजिक या किसी अन्य चीज में कुछ अच्छा कर रहा है तो उसे नजरअंदाज न करें और उसकी तारीफ करें. इससे उसे आगे और बेहतर करने की प्रेरणा मिलती है और वह अधिक मेहनत करता है. ऐसा करने से वे अंदर से खुश रहेंगे और कुछ अच्छा करते रहने की कोशिश करेंगे.

साथ समय बिताएं

अक्सर देखा जाता है कि कई परिवार अलग-अलग बैठकर खाना खाते हैं. अगर आप साथ मिलकर खाएंगे तो इससे बच्चों में तनाव और अकेलेपन की भावना कम होती है. कोशिश करें कि आप अधिक से अधिक समय साथ बिताएं और अच्छा स्ट्रेस फ्री समय बिताएं. साथ खेलें, टीवी देखें, वीडियो गेम देखें, सैर करें आदि. ऐसा करने से बच्चे आप से अपने दिल की बात कह सकेंगे.

प्यार जताना जरूरी

बच्चे जैसे-जैसे बड़े होने लगते हैं माता-पिता उन्हें प्यार जताना बंद करने लगते हैं लेकिन यह गलत तरीका है. बढ़ते बच्चों को और अधिक प्यार और केयर की जरूरत होती है. ऐसे में जब भी मौका मिले बच्चों के साथ घूमें-फिरें और उन्हें यह महसूस कराएं कि आप उन्हें प्यार करते हैं और उनकी कद्र करते हैं.

घर को यूनिक लुक देते हैं रेनबो डेकोर

घर को सजाते समय हर किसी की इच्छा होती है कि इसे कुछ इस तरह सजाया जाए कि यह अधिक कलरफुल बने. कलरफुल हाउस देखने में अधिक जीवंत नजर आता है. इससे आपका मूड भी हमेशा ही अच्छा रहता है. आमतौर पर घर को अधिक कलरफुल बनाने के लिए लोग अपने घर की एक्सेसरीज में कई कलर्स शामिल करते हैं. अगर आप कलर्स को एक स्टेटमेंट लुक में घर में इस्तेमाल करना चाहते हैं तो रेनबो डिजाइन को डेकोर में एड करें. यह आपके घर को अधिक जीवंत बनाएगा. आप इसे बच्चों के कमरे के अलावा घर के विभिन्न कमरों में बेहद आसानी से यूज कर सकते हैं.

सीढ़ियों को बनाएं अधिक कलरफुल

अगर आपको यह समझ नहीं आ रहा है कि आप अपने घर में रेनबो को आसान तरीके से किस तरह शामिल करें तो इसका सबसे अच्छा तरीका है कि आप अपने घर की सीढ़ियों को रेनबो कलर में पेंट करें. यह देखने में बेहद ही ब्यूटीफुल लगते हैं. फिर आपको अलग से अपने घर को सजाने के लिए प्रयत्न नहीं करने पड़ते हैं.

बनाएं रेथ

अगर आप अपने बेडरूम से लेकर लिविंग एरिया की वॉल में एक स्टेटमेंट पीस को एड करना चाहती हैं तो ऐसे में आप एक रेनबो डिजाइन की रेथ को बनाकर वहां पर हैंग कर सकती हैं. रेनबो में कई कलर्स को शामिल किया जाता है, इसलिए आपकी वॉल का कलर चाहे जो भी हो, यह रेथ देखने में अच्छा ही लगेगा. खासतौर से मॉर्डन डिजाइन होम डेकोर के साथ यह रेथ अच्छी तरह मिक्सअप हो जाता है.

बेडरूम का करें मेकओवर

बेडरूम में हम सभी रिलैक्स करना पसंद करते हैं. ऐसे में बेडरूम में कुछ बोल्ड व ब्राइट कलर्स को शामिल करने से आपके मन में भी पॉजिटिविटी आती है. आप चाहें तो बेडरूम में एक रेनबो डिजाइन वॉल आर्ट बनाकर हैंग कर सकती हैं. इसके अलावा आप अलग-अलग कलर्स को ब्लेंड करके भी बेडरूम को ब्यूटीफुल बना सकती हैं. आप पैटर्न वॉलपेपर सीलिंग से लेकर विंडो कवरिंग में डिफरेंट कलर्स को शामिल कर सकती हैं.

खूबसूरत ट्रे

आमतौर पर यह माना जाता है कि घर को खूबसूरत बनाने के लिए बहुत अधिक खर्च करने की जरूरत होती है. वास्तव में ऐसा नहीं है. कुछ छोटे-छोटे बदलाव भी आपके घर को एक यूनिक टच देते हैं. मसलन, आप अपनी किचन में रेनबो ट्रे का इस्तेमाल कर सकती हैं या फिर डाइनिंग एरिया में रेनबो टेबलक्लॉथ या वास उस एरिया को अधिक जीवंत बनाने में मदद करेगा.

वॉल म्यूरल का करें इस्तेमाल

यह भी एक अच्छा तरीका है अपने घर के किसी भी हिस्से में रेनबो कलर्स को बेहद खूबसूरती के साथ शामिल करने का. आजकल मार्केट में कई तरह के म्यूरल्स अवेलेबल हैं. आप खुद भी अपने घर के लिए म्यूरल कस्टमाइज करवा सकती हैं. आप टाई-डाई लुक में भी रेनबो वॉल म्यूरल का ऑप्शन चुन सकती हैं. यह देखने में बेहद ही क्लासी लगता है.

स्किनी जींस के साथ पहनें यह फुटवियर

जींस आज के समय में महिलाओं के वार्डरोब का अहम हिस्सा है. केजुअल्स से लेकर पार्टीज तक में महिलाएं जींस पहनना पसंद करती हैं. इसकी पॉपुलैरिटी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जींस में बूटकट स्टाइल से लेकर स्किनी जींस तक कई स्टाइल अवेलेबल हैं. हर टाइप की जींस का अपना एक अलग चार्म होता है.

आमतौर पर महिलाएं जींस पहनते समय उसके साथ अपर वियर को स्टाइल करने पर अधिक फोकस करती हैं. हालांकि इसके साथ-साथ आपको फुटवियर पर भी इतना ही ध्यान देना चाहिए. इससे आपका लुक स्टनिंग नजर आता है.

स्ट्रैपी सैंडल्स

अगर आप स्किनी जींस के साथ एक एलीगेंट और फेमिनिन लुक क्रिएट करना चाहती हैं तो इसके साथ स्ट्रैपी सैंडल्स पहनना अच्छा विचार हो सकता है. इसमें आप हाई हील्स का ऑप्शन चुनें. अगर आप स्ट्रैपी सैंडल्स के साथ स्किनी या फिटेड जींस पहन रही हैं तो आप इसके साथ लूज टॉप और स्वेटर को पेयर करें. यह आपके लुक को बैलेंस करके उसे अधिक स्मार्ट बनाने में मदद करेगा.

लोफर्स

अगर आप स्किनी जींस के साथ एक केजुअल व कंफर्टेबल लुक कैरी करना चाहती हैं तो ऐसे में इसके साथ लोफर्स भी स्टाइल किए जा सकते हैं. लोफर्स में आप कलर्स से लेकर स्टाइल व प्रिंट्स आदि को पहन सकती हैं. अगर आप ऑफिस लुक में लोफर्स पहन रही हैं तो शर्ट विद स्किनी जींस के साथ ब्लैक या ग्रे लोफर्स पहनें. केजुअल्स में प्रिंटेड टी के साथ इन्हें पहना जा सकता है.

बैले फ्लैट्स

अगर आप स्किनी जींस के साथ एक कंफर्टेबल और स्टाइलिश लुक कैरी करना चाहती हैं तो ऐसे में इसके साथ बैले फ्लैट्स पेयर किए जा सकते हैं. डे टू डे लाइफ में बैले फ्लैट्स को पहनना अच्छा आइडिया है. आप इन्हें कई तरह से स्टाइल कर सकती हैं. मसलन क्लासिक लुक में आप ब्लैक बैले फ्लैट्स पहन सकती हैं. व्हाइट व ग्रे बैले फ्लैट्स भी देखने में काफी अच्छे लगते हैं.

स्नीकर्स

इन दिनों फुटवियर में स्नीकर्स महिलाओं द्वारा काफी पसंद किए जा रहे हैं. आमतौर पर महिलाएं इन्हें लॉन्ग ड्रेस से लेकर शॉर्ट ड्रेस के साथ पेयर करना पसंद करती हैं. हालांकि स्किनी जींस के साथ भी स्नीकर्स देखने में काफी अच्छे लगते हैं. मसलन कूल और रिलैक्सड लुक में आप टी-शर्ट विद स्किनी जींस के साथ स्नीकर्स पहन सकती हैं. विंटर में आप इसे ट्रेंच से लेकर लेदर जैकेट के साथ लेयर कर सकती हैं.

पम्पस

स्किनी जींस के साथ पम्पस का कॉम्बिनेशन बेहद अच्छा लगता है और इस लुक की सबसे खास बात यह है कि आप स्किनी जींस के साथ पम्पस को कभी भी और कहीं पर भी पहन सकती हैं. पम्पस आपके पैरों के लंबे होने का भी एहसास कराते हैं. आप स्किनी जींस के साथ व्हाइट, ब्लैक या पिंक पम्पस को पहन सकती हैं. इसके अलावा एनिमल प्रिंट पम्पस आपके डेली लुक में स्टाइल का तड़का लगाते हैं. अगर आप एक मोनोक्रोम लुक कैरी करना चाहती हैं तो ब्लैक का ऑप्शन चुनें. यह देखने में हमेशा ही क्लासी लगता है.

साइबर बुलीइंग से निपटें

साइबर बुलीइंग आज के दौर में बच्चों, किशोरों और बड़ों के लिए गंभीर समस्या बन चुकी है. सबसे पहले पहचानना होगा कि कोई आपको साइबर बुलीइंग का शिकार बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहा है? टिप्पणियों के आधार पर पता लगाने की कोशिश करें कि आपकी पहचान का कौन सा व्यक्ति ऐसा कर सकता है.

प्रमाण रखें

आपके बारे में जो भी भद्दी या नकारात्मक टिप्पणियां की गई हैं, उनका स्क्रीनशॉट रखें ताकि आप अपने आरोप को प्रमाणित कर सकें.

तवज्जो न दें

किसी की बेहूदा टिप्पणी को दिल पर लेकर चिंतित या शर्मिंदा न हों. ध्यान रखें, अपराधी आप नहीं, कमेंट करने वाला होता है. अपने परिवार, मित्रों, शिक्षकों व मेंटर्स की मदद लें. अपनी फीलिंग शेयर करके मन हल्का करें.

प्राइवेसी सेटिंग

सोशल मीडिया प्रोफाइल की सेटिंग को प्राइवेसी मोड में डालें. जिस अकाउंट से आपका शोषण किया जा रहा है, उसे अनफॉलो या फिर ब्लॉक कर दें.

तस्वीरें शेयर न करें

कभी भी सोशल मीडिया पर अपनी निजी तस्वीरें शेयर न करें. तस्वीरें बेहद नजदीकी लोगों के साथ ही शेयर करनी चाहिए.

कानूनी कार्रवाई करें

अगर मामला गंभीर हो चुका है और पानी सिर से ऊपर चला गया है तो ज्यादा सोचने-समझने में समय नष्ट न करें. अपने इलाके की साइबर क्राइम सेल में शिकायत दर्ज कराएं.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >> शुक्रवार, 28 जनवरी, 2022

एक नज़र

पिंकसिटी प्रेस क्लब में भी लहराया तिरंगा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। 73वें गणतंत्र दिवस पर पिंकसिटी प्रेस क्लब अध्यक्ष मुकेश मीणा ने क्लब परिसर में झण्डारोहण कर क्लब सदस्यों को शुभकामनाएं दी।

महासचिव रामेन्द्र सोलंकी ने सभी सदस्यों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि कोरोना प्रोटोकोल की पालना में गणतंत्र दिवस समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। राष्ट्रगान एवं देशभक्ति गानों से प्रेस क्लब परिसर गूंज उठा। इस अवसर पर क्लब कर्मचारियों को पारितोषित किया गया। प्रेस क्लब एवं क्लब सदस्यों की सुविधा के लिए हर संभव बेहतर प्रयास किए जा रहे है। समारोह में प्रेस क्लब कर्मचारियों का लम्बे समय से बन्द पड़ा ईपीएफ एवं ईएसआई सुविधा को सुचारू करवाया। कर्मचारियों को ईएसआई सुविधा के कार्ड वितरित किए।

इस अवसर पर उपाध्यक्ष राजकुमार शर्मा, कार्यकारिणी सदस्य गिरिराज प्रसाद गुर्जर, पुष्पेन्द्र सिंह राजावत, नमोनारायण अवस्थी, राहुल भारद्वाज, अनिता शर्मा, ओमवीर भार्गव, वसीम अकरम कुरैशी, पूर्व अध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह राठौड, किशोर शर्मा, नीरज मेहरा, राधारमण शर्मा पूर्व महासचिव रोशन लाल शर्मा, हरीश गुप्ता, पूर्व उपाध्यक्ष देवेंद्र सिंह, वरिष्ठ पत्रकार विजय शर्मा किक्की, सुरेश शर्मा, बृहस्पति शर्मा, योगेंद्र शर्मा, सुरेश योगी, शंकर शिखर, श्याम माथुर, नीलम मूंजाल, बृजभूषण शर्मा, श्याम शर्मा, आशा पटेल, चन्द्रवीर खंगारोत, हीरा सिंह, सुरेन्द्र जैन पारस अनिल यादव, प्रदीप शेखावत उपस्थित थे।

बांसवाड़ा के चार और भीलवाड़ा के तीन स्थानों पर मैग्नीज, लाईमस्टोन, आयरन ऑर व गारनेट की नीलामी पूर्व तैयारी मार्च तकः डॉ. सुबोध अग्रवाल

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मांइस विभाग के अतिरिक्त डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया है कि मार्च, 22 तक प्रदेश के बांसवाड़ा के चार और भीलवाड़ा के तीन प्रधान खनिजों के कंपोजिट लाइसेंस ब्लॉक्स का जियोलोजिकल रिपोर्ट, राजस्व रिकार्ड, सुपर इंपोजिशन और डीजीटाइजशन का कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा जिससे इसी वित्तीय वर्ष में इन ब्लॉकों की कंपोजिट लाइसेंस के लिए ई नीलामी का काम आरंभ हो सके। डॉ. अग्रवाल गुरुवार को सचिवालय में वर्चुअल बैठक के माध्यम से राजस्थान स्टेट मिनरल एक्सपलोरेशन ट्रस्ट की समीक्षा बैठक ले रहे थे। उन्होंने बताया कि आरंभिक खोज में बांसवाड़ा के कालाखूंट, तांबेसरा और रुपखेड़ा में मैग्नीज के भण्डार पाए गए हैं वहीं बांसवाड़ा के ही पृथीपुरा में लाईम स्टोन के भण्डार खोजे गए हैं। इसी तरह से भीलवाड़ा के धूलखेडा-जिपिया और कजलोदिया में आयरन ऑर व सांकरिया खेड़ा में गारनेट के भण्डार मिले है। उन्होंने बताया कि नीलामी पूर्व आवश्यक तैयारियों में एक करोड़ 2 लाख के व्यय की संभावना है वहीं इससे अपफ्रंट पेमेंट सहित आगामी करीब 50 सालों में करीब 14752 करोड़ रुपए राजस्व मिलने की संभावना है। उन्होंने बताया कि आरएसएमईटी के माध्यम से प्रदेश में खोज कार्य के लिए आवश्यक संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी।

73वें गणतंत्र दिवस का राज्य स्तरीय समारोह

हर्ष, उल्लास और गौरव से मनाया गया गणतंत्र दिवस

राज्यपाल कलराज मिश्र ने फहराया राष्ट्रीय ध्वज

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी भी रहे उपस्थित

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने देश के 73 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बुधवार को यहां सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। राज्यपाल ने इसके उपरान्त परेड का निरीक्षण किया।

राज्यपाल मिश्र ने सलामी गारद द्वारा प्रस्तुत मार्च पास्ट की सलामी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी भी उपस्थित थे। गणतंत्र दिवस के भव्य समारोह में हाडीरानी महिला बटालियन, पुलिस आयुक्तालय जयपुर, एसडीआरएफ, जीआरपी, चौदहवीं बटालियन आरएसी, बॉर्डर होमगार्ड, अरबन होमगार्ड, कारागृह आदि की प्लाटून ने परेड में हिस्सा लिया। परेड का नेतृत्व भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारी मनीष कुमार ने किया।

कोविड प्रोटोकॉल के बीच गणतंत्र दिवस के आयोजन में लोक कलाकारों और पुलिस बैंड द्वारा मनोहारी रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। स्टेडियम में जब लंगा लोक कलाकारों ने संत नरसी मेहता रचित और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये...' गाया तो पूरा माहौल ही मानो बापू की स्मृतियों से ओत-प्रोत हो गया। विभिन्न राज्यों से आए लोक कलाकारों ने नृत्य एवं गायन की समधुर प्रस्तुतियों से गणतंत्र दिवस समारोह में उपस्थित हर विशिष्ट एवं आमजन को अपने रंग में सराबोर कर दिया। प्रख्यात रंग निर्देशक भानु भारती के निर्देशन में हुआ सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया ।

राजस्थान पुलिस के श्वान दल ने अद्भुत करतब दिखा कर उपस्थित जनसमूह की भरपूर तालियां बटोरी। श्वान सुसैन ने राज्यपाल श्री मिश्र को गुलदस्ता भेंट किया, वही एक्शन ड्रिल में श्वानों ने सूर्य नमस्कार, बाधा कूद, मादक पदार्थ की पहचान, अपराधी को पकड़ कर सूझ-बूझ की मिसाल पेश की। अश्वारोही दल ने तेज रफ्तार से घोड़े दौड़ाते हुए टेन्ट पेगिंग के बेहतरीन करतब दिखाये। सेना बैंड एवं सेन्ट्रल पुलिस बैंड ने समवेत स्वर में देशभक्तिपूर्ण धुनों की प्रस्तुतियां दी। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। राज्य स्तरीय समारोह में मुख्य सचिव श्री निरंजन आर्य, पुलिस महानिदेशक श्री एम.एल. लाठर सहित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं आमजन उपस्थित थे। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री अरूण जोशी एवं डॉ.ज्योति जोशी द्वारा किया गया। राज्यपाल कलराज मिश्र ने 73वें गणतंत्र दिवस पर सवाई मानसिंह स्टेडियम के समीप अमर जवान ज्योति पर पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को नमन किया और मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

गणतंत्र दिवस पर बड़ी चौपड़ पर झण्डारोहण

संविधान की रक्षा एवं लोकतंत्र को मज़बूत बनाने का संकल्प लें: अशोक गहलोत

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि गणतंत्र दिवस के इस पावन पर्व पर हम संकल्प लें कि देश के संविधान की रक्षा एवं लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने के लिए सभी मिलकर कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि आज देश में तनाव एवं अविश्वास के माहौल को देखते हुए हमें गांधी जी के बताए सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलने की आवश्यकता है।

गहलोत बुधवार को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में बड़ी चौपड़ पर झण्डारोहण के बाद सम्बोधित कर रहे थे। श्री गहलोत ने प्रदेशवासियों को गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आज के दिन हम उन ज्ञात-अज्ञात सेनानियों को याद करें, जिन्होंने इस मुल्क को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। गांधी जी की रहनुमाई में पण्डित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, बाल गंगाधर तिलक एवं गोपाल कृष्ण गौखले सहित कई महापुरूषों ने आजादी की इस लड़ाई में अमूल्य योगदान दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने हमें एक मजबूत संविधान दिया है। हम सभी की जिम्मेदारी है कि संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करते हुए लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करें। उन्होंने कहा कि आज देश में तनाव एवं अविश्वास का माहौल है। यहां सैकड़ों धर्म, जातियों एवं वर्गों के लोग रहते हैं। इन सभी को साथ लेकर अनेकता में एकता वाले इस मुल्क को एक व अखण्ड रखना है।

गहलोत ने कहा कि आजादी के बाद हमारे देश ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उद्योग एवं कृषि सहित हर क्षेत्र में तरक्की की है, लेकिन 70 सालों की उन उपलब्धियों को आज नकारने के प्रयास हो रहे हैं। हमें लोकतंत्र में विश्वास रखते हुए ऐसी ताकतों को कामयाब नहीं होने देना है। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, पंजाब के मुख्यमंत्री बेअंत सिंह ने शहादत देकर भी देश को तोड़ने वाली ताकतों को कामयाब नहीं होने दिया। आज हमें इसी भावना के साथ लोकतंत्र के समक्ष मौजूद चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है।

गहलोत ने कहा कि विश्वव्यापी कोरोना महामारी के लम्बे दौर का राज्य सरकार ने हर वर्ग को साथ लेकर सफलतापूर्वक सामना किया है। हमारे कुशल प्रबंधन की देश और दुनिया में तारीफ हुई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार संवेदनशील, पारदर्शी और जवाबदेह सुशासन देने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। हमारा प्रयास है कि प्रदेशवासियों को गुड गवर्नेंस मिले, रोजगार के अधिक से अधिक अवसर पैदा हों और राजस्थान उन्नति के शिखर पर पहुंचे।

राजभवन में संविधान पार्क का शिलान्यास

गांधीजी, चरखा, महाराणा प्रताप और चेतक, विवेकानन्द की लगेंगी प्रतिमाएं

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने गणतन्त्र दिवस पर राजभवन में संविधान पार्क का शिलान्यास किया। जेडीए की ओर से करीब 8 करोड़ 16 लाख रुपए की लागत से बनाए जा रहे संविधान पार्क में चरखा कातते राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की गन मेटल की वह प्रतिमा विशेष आकर्षण के तौर पर प्रदर्शित की जाएगी, जिसने आजादी के आंदोलन में चरखे के जरिए स्वेदशी के आदर्श को जीवंत किया था। दूसरी ओर महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की सफेद मार्बल की मूर्ति भी प्रदर्शित की जाएगी। भारत गौरव स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा भी कलाकार बनाकर यहां लगाएंगे। राजभवन में राष्ट्रीय पक्षी मोर रहते हैं। इसलिए यहां मोर के सफेद मार्बल (अम्बाजी) में स्तम्भ बनाए जाएंगे। पार्क में पत्थर की छतरियां,वॉकवे और फाउण्टेन भी लगाए जाएंगे।

जेडीसी गौरव गौयल ने बताया कि भारतीय संविधान और उससे जुड़े ऐतिहासिक घटनाक्रम की याद दिलाने के लिए 45 अलग-अलग तरह की आर्ट संविधान पार्क में प्रदर्शित की जाएंगी। भारतीय संविधान में योगदान देने वाली महान हस्तियों की प्रतिमाएं यहां लगाई जाएंगी। संविधान की संरचना और उसके वास्तिविक मूल्यों को शिलालेखों पर अंकित किया जाएगा। आम जनता और पर्यटकों के लिए इस संविधान पार्क का निर्माण किया जाना है। पार्क से जुड़े फैक्ट्स की जानकारी अलग-अलग प्रतिमाओं और शिलालेखों को वॉकवे के पास लगाकर ऑडियो-विजुअल तौर पर दिखाई-सुनाई जाएंगी। जिससे आम जनता, स्कूली बच्चे और पर्यटक संविधान की भावना को ग्रहण कर सकें। जेडीए 15 अगस्त 2022 तक यह काम पूरा करेगा। जयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड की ओर से ये काम फायनेंस किया जा रहा है। राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी ने वैदिक मंत्रोचार के बीच संविधान पार्क की नींव रखी। संविधान समिति का गठन, संविधान के निर्माण और इसे लागू करने से जुड़े महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक्रम और संसद में इस सम्बन्ध में हुई कार्यवाही को भी चित्रों और मूर्ति आर्ट के जरिए संविधान पार्क में जीवंत किया जाएगा।

12वां राष्ट्रीय मतदाता दिवसः वाणिज्य कर आयुक्त ने मतदान की शपथ दिलाई

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। 12वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर मंगलवार को वाणिज्य कर आयुक्त श्री रवि जैन ने मुख्य कर भवन के प्रांगण में मुख्यालय के सभी अधिकारी एवं कार्मिकों को मतदान करने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर रवि जैन ने कहा कि मतदान का अधिकार एवं उसका सम्यक प्रयोग करके ही लोकतंत्र को सशक्त एवं जीवंत बनाया जा सकता है। इस अवसर पर अतिरिक्त आयुक्त (प्रशासन) श्री जगवीर सिंह सहित अन्य विभागीय अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित थे।

स्टेट टैक्स एडवाइजरी कमेटी की बैठक आज

बजट से पहले सीएम गहलोत उद्योग-व्यापार जगत से लेंगे सुझाव

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। सीएम अशोक गहलोत 2022-23 के बजट से पहले उद्योग और व्यापार जगत से जुड़े प्रतिनिधियों के सुझाव लेगी। सीएम अशोक गहलोत ने कल शाम 4 बजे स्टेट लेवल टैक्स एडवाइजरी कमेटी की बैठक बुलाई है। बैठक में सीएम और संबंधित विभागों के मंत्री, मुख्य सचिव, वित्त-राजस्व सचिव,कमेटी सदस्य, संबंधित विभागों के अधिकारी और उद्यमी, व्यापार जगत के संगठनों के प्रतिनिधि बजट सुझावों पर चर्चा करेंगे। कोविड महामारी के दौर में समावेशी-संतुलित बजट देने, उद्योगों को राहत के साथ टैक्स कलेक्शन सुधारने, नए इंडस्ट्रियल एरिया जल्द शुरू करने, उद्यमियों, निवेशकों और व्यवसायियों के आवेदनों का उद्योग, रीको और पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड से तय समय में निपटारा करने, इंवेस्टमेंट प्रमोशन, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए नीतिगत मामलों पर भी चर्चा की जाएगी।

वित्तीय संसाधनों में बढ़ोतरी और टैक्स रेवेन्यू बढ़ाने पर सरकार सुझाव लेगी। ताकि बजट में उन्हें शामिल किया जा सके। रिफंड का बकाया भुगतान, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति में तहत इन्सेंटिव और पूंजीगत ब्याज दावों का भुगतान जारी करने, पेट्रोलियम पर वैट घटाने, उद्योगों की बिजली की रेट घटाने की कारोबारियों, व्यापारियों, उद्यमियों की बड़ी मांगे हैं। एमएसएमई सेक्टर को मजबूती देने, सिंगल विंडो एक्ट प्रभावी बनाने, इंस्पेक्टर राज खत्म करने, बाड़मेर रिफाइनरी का पेट्रोकैमिकल हब, दिल्ली-मुम्बई इन्डस्ट्रीयल कॉरीडोर और डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर को प्राथमिकता देने, उद्यमियों की सी-फॉर्म जमा कराने की अंतिम तिथि बढ़ाने, पर्यटन और होटल सेक्टर को इंडस्ट्रीयल बेनिफिट देने, बिजली की रेट घटाने की मांगें भी उठ रही हैं।

स्टाम्प ड्यूटी घटाने, आढ़त ढाई फीसदी करने की मांग

अखिल भारतीय वैश्य समाज सम्मेलन के प्रदेशाध्यक्ष गोविंद अग्रवाल ने कहा कि सरकार को पेट्रोलियम पर वैट कम करना चाहिए। रियल एस्टेट सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए रजिस्ट्री पर स्टाम्प ड्यूटी घटानी चाहिए। फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरूण अग्रवाल ने कहा वेयरहाउस गोदामों को अब तक रीको ने इंडस्ट्री का दर्जा नहीं दिया है। जबकि यूडीएच डिपार्टमेंट इसे अलाउ कर चुका है। इनसे नगर निगम यूडी टैक्स वसूली कर रहा है। निगम को रीको एरिया में घुसने का अधिकार नहीं होना चाहिए। दिल्ली और हरियाणा ने वेयरहाउस गोदामों को इंडस्ट्रीयल दर्जा और लैंड यूज चेंज परमिशन दी है। उसी तर्ज पर राजस्थान में भी दर्जा मिले। ताकि कोई भी सर्विस इंडस्ट्री के ऑफिसेज-कॉम्प्लेक्स शहरों में इंडस्ट्रीयल एरिया में बन सकें। इससे पॉल्यूशन फैलाने वाली इंडस्ट्री शहरों से हटेंगी और पॉल्यूशन कम होगा। राजस्थान खाद्य पदार्थ व्यापार संघ के चेयरमैन बाबूलाल गुप्ता ने कहा कोविड से व्यापार जगत को काफी नुकसान हो रहा है। एग्रीकल्चर मार्केटिंग के संबंध में आढ़त पौने 2 से बढ़ाकर ढाई परसेंट करने की मांग सरकार से है। दुकानदारों, व्यापारियों को 60 साल की उम्र पूरी करने पर सरकार की ओर से सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी जानी चाहिए। सरसों पैदावार बढ़ाने के लिए किसान को भूमि समतल करने के लिए 80 फीसदी सब्सिडी दी जाए। अभी जो बारानी जमीन काम नहीं आ रही है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**